जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

मार्च 2023 | अंक 19 वां



माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा आईएनएस मोरमोगाओ की भारतीय नौसेना को कमीशनिंग

राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता



दिनांक 23 जनवरी 2023 को एमडीएल ने भारतीय नौसेना को आईएनएस वागीर की कमीशनिंग



वागशीर का जलावतरण

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुख्य परामर्शदाता

डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक

श्री अरुण कुमार चान्द, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध)

श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

सुश्री जयंतिका मुखर्जी, राजभाषा अधिकारी

मुद्रक

युनिटी प्रिंटींग प्रेस

गाला नं. 8 व 9, तलमजला, रेतीवाला इंडस्ट्रियल इस्टेट,

एच. ए. पालव मार्ग, घोडपदेव, भायखला (पूर्व), मुंबई – 400 027.

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड,

डॉकयार्ड रोड, मुंबई 400010

फोन : 22-23710456

विषय - सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से... 3

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश... 4

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश..... 5

संपादकीय..... 6

एमडीएल का युद्धपोत निर्माण 7
– जयंतिका मुखर्जी, राजभाषा अधिकारी

तकनीकी सेवा (टीएस) विभाग : एक संक्षिप्त परिचय 10
– रितु राज सिंह, उप प्रबंधक (त.से. – वाणिज्य)

माझगांव डॉक एक 'सुरक्षा कवच' 14
– दिनेश नारायण मढवी, इलेक्ट्रिक मकेनिकल (विद्युत एवं आयुध)

हिंदी साहित्य में गोस्वामीजी का स्थान 15
– सुबोध जाधव, फिटर (जनि–विद्युत रिपेयर)

हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा और जनभाषा 16
– सिमनलाल आर्य, सहायक (राजभाषा अनुभाग)

सोच बदलो 19
– प्रसाद कुलकर्णी, उप कार्यालय अधीक्षक (एमडीसी)

सुनहरा पौधा 24
– घोशिता एकनाथ शेलार, वित्त (कॉस्ट ट्रेनी)

मेरा हिंदुस्तान है 26
– कार्तिक सकिनाला, उप प्रबंधक (पाइप शॉप–पू.खं)

मधुमक्खी (आपबीती) 28
– अक्षय संजय देखणे, पीए कम क्लर्क

दो दोस्त 31
– भक्ती तुकाराम हरदास, पीए कम क्लर्क (वित्त)

सफर हिंदी भाषा का 32
– योगेश बी पंडित, प्लानर एस्टीमेटर (जनि–हल योजना)

ऊर्जा संरक्षण 33
– श्रीशैल नंदकुमार रायचुरे,
– योजनाकार एवं अनुमानकर्ता (पूर्व खंड)

श्री छत्रपती शिवाजी महाराज का रायगढ़ का किला को 3 साल की राधा ने नंगे पाँव चढ़ा। 35
– पंकज सिंह, उप महाप्रबंधक (जनि – टेक्निकल)

राष्ट्रकवि – मैथिलीशरण गुप्त 36
– मोहिनी महेंद्र सावंत, प्लानर एस्टीमेटर

हमारा अनिक चेंबूर है सबसे प्यारा 38
– तपन मंडल, प्रबंधक (अनिक चेंबूर)

शीट मेटल (धातु पत्र) 40
– आदित्य सिंह, वेल्डर

एक देश एक राशन कार्ड योजना 42
– पी डी सिद्दीकी, पूर्व उप प्रबंधक (राजभाषा)

मानसिक स्वास्थ्य 47
– हरक सिंह बिष्ट, ऑफिस स्टाफ

पनडुब्बी निर्माण और माझगांव डॉक 52
– श्रीनिवास सिन्हा, अमप्र (मा.सं. एवं रा.भा.)

भारतवंशीबहुल राष्ट्रों में हिंदी 57
– विश्वास सावंत, सहायक (पूर्व–खंड–वाणिज्य)

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियां 61

इस पत्रिका में दिए गए लेखकों के विचार से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।



अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

मान्यवर,

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की गृहपत्रिका 'जलतरंग' नए रूप में प्रकाशित हो रही है। इसके माध्यम से मुझे आप सभी से जुड़ने का अवसर मिलता है।

गृहपत्रिका में कंपनी की निरंतर प्रगति और नियमित होने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी पाठकों को देने की कोशिश की जाती है।

कंपनी अपने प्रमुख उत्पाद जहाज और पनडुब्बी निर्माण को समय से पूरा करने के लिए वचनबद्ध है। राजभाषा के विकास एवं प्रचार–प्रसार में एमडीएल हमेशा प्रयत्नशील है। इसी के चलते 'जलतरंग' का प्रत्येक अंक अपने आरंभ से अब तक पुरस्कार प्राप्त करता रहा है जिससे यह प्रमाणित होता है कि पत्रिका की सामग्री पठनीय और सराहनीय है।

26 जुलाई 2022 की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टॉलिक) की बैठक में पत्रिका को पुन: प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। साथ ही आशीर्वाद हिंदी संगठन से राजभवन में महामहिम राज्यपाल श्री भगत सिंह कोश्यारी से प्राप्त 'सर्वश्रेष्ठ गृहपत्रिका' का प्रथम पुरस्कार का सम्मान भी एमडीएल के 'जलतरंग' पत्रिका को प्राप्त हुआ है, जो निस्संदेह किसी भी संगठन की प्रतिष्ठा और श्रेय का सूचक है। यह सभी कर्मचारियों के सक्रिय सहयोग का परिणाम है। मैं सभी कर्मचारियों के साथ–साथ, राजभाषा अनुभाग के योगदान की भी सराहना करता हूँ।

मैं पत्रिका के सफलता की कामना करता हूँ।

संजीव सिंघल

श्री संजीव सिंघल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश

एमडीएल की गृह पत्रिका 'जलतरंग' के 19वें अंक के प्रकाशन पर मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। इस पत्रिका को हमेशा से ही पुरस्कारों से सम्मान मिलता रहा है। पुरस्कारों का यह दौर वर्ष 2014 से शुरू हुआ था जो आज भी बरकरार है। इन पुरस्कारों में राजभाषा 'कीर्ति पुरस्कार', टॉलिक का पुरस्कार, स्कोप, आशीर्वाद जैसे संस्थाओं से प्राप्त पुरस्कार शामिल हैं। वैसे तो एमडीएल का मुख्य कार्य पोतों और पनडुब्बियों का निर्माण है पर मैं यह आनंद के साथ कह सकता हूँ कि यहाँ केवल पोत और पनडुब्बी का ही निर्माण नहीं होता बल्कि साहित्य में रुचि रखने वालों की भी कमी नहीं है। यही कारण है कि एमडीएल की पत्रिका पाठकों को लुभाती भी है और उनके साहित्य लेखन के लिए उद्भावना शक्ति को भी बढ़ावा देती है।

भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित सभी लक्ष्यों को पूरा करने में एमडीएल हमेशा सजग और प्रयत्नशील रहा है। हिंदी जन–गण की भाषा है इसका अधिकतम प्रचार–प्रसार करना एवं कार्यालयीन कार्यों में इसका अधिक से अधिक उपयोग करना प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी की ज़िम्मेदारी है।

प्रस्तुत अंक में एमडीएल के उत्पाद से जुड़े लेख, आपबीती, यात्रा वृतांत, कविता जैसे विधाओं का समावेश किया गया है। भाषा सरल एवं सुबोध रखने का प्रयास किया गया है। इसमें विभिन्न पाठक वर्ग की रुचि की सामग्री का चयन है।

मैं एमडीएल के उन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विशेष धन्यवाद देता हूँ जिनकी रचनाएँ इस पत्रिका में प्रकाशित की गई हैं।

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि 'जलतरंग' सतत प्रगति पर सर्वोत्तम पत्रिका बनी रहे।

वासुदेव

कमांडर वासुदेव पुराणिक, भानौ (नि)
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)



कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश

राजभाषा पत्रिका ''जलतरंग'' के 19 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष है। पत्रिका प्रकाशन का एकमात्र ध्येय माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में तथा इसके बाहर हिंदी का प्रचार एवं प्रसार करना है।

वर्तमान में, भारत के सभी राज्यों में हिंदी भली–भांति बोली एवं समझी जा सकती है। अब हिंदी अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बन गई है। प्रत्येक देश की एक राजभाषा होती है जो राष्ट्र की जनता के संचार की माध्यम होती है। भाषा देश को एक सूत्र में बांधने का काम करती है। राजभाषा की प्रगति करना प्रत्येक नागरिक तथा सरकारी संस्थान का कर्तव्य है।

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया है अब इसे जन–जन तक पहुँचना सभी सरकारी संस्थानों की जम्मेदारी है। हमारा भरपूर प्रयास रहता है कि कार्यालयीन कार्य में हिंदी का सरल एवं सुबोध प्रयोग किया जाएं ताकि सभी कर्मचारी आसानी से इसे समझ एवं लिख सके। इसके प्रयोग से अवश्य ही देश की एकता, अखंडता, तथा सामुदायिक सौहार्द को कायम रखने में सहायता मिलती है तथा आम जन में भी आपसी भाईचारा को बढ़ावा मिलता है।

कंपनी ने अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए पत्राचार लक्ष्य प्राप्त किया है और इसे लगातार कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए कंपनी के सभी कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु एमडीएल सतत प्रयत्नशील है।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक अपने उद्देश्य में सफल होगा और इसमें संकलित रचनाएँ सभी पाठकों के लिए लाभप्रद और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

संतोष कु. मल्लिक

डॉ. संतोष कुमार मल्लिक
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)



संपादकीय...

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड देश का प्राचीन एवं प्रमुख शिपयार्ड है यह मुंबई के पूर्वी तट पर हार्बर क्षेत्र में स्थित है। माझगांव टापू के पास पहले से ही एक सकरी क्रीक थी जिसके माध्यम से जहाज समुद्र के किनारे तक आते थे। मराठा शासन के दौरान यहाँ एक सुखी गोदी का निर्माण किया हुआ था। 16 वीं शताब्दी में पुर्तगलियों ने जहाजों की मरम्मत के लिए सूरत में एक गोदी का निर्माण किया था। अंग्रेजों से पुर्तगलियों का संबंध जुड़ने के बाद मुंबई गोदी का विकास पारसी जहाज निर्माताओं के माध्यम से यहाँ विकसित हुआ। विभिन्न मालिकों के अंतर्गत यहाँ सुखी गोदियों का निर्माण हुआ। उन्होंने मूलभूत सुविधाओं का विकास किया और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद देश स्वतंत्र होने से पहले माझगांव डॉक कंपनी का गठन किया गया।

प्रस्तुत अंक में कंपनी के उत्पाद से संबंधित लेख के अलावा कविता, कहानी, आदि गद्य की विभिन्न विधाओं का संयोजन भी किया गया है। साथ ही सरकारी योजना – 'एक राष्ट्र एक राशन कार्ड' को भी सभी की सूचना एवं जानकारी के लिए प्रस्तुत किया गया है।

पत्रिका का मूल उद्देश्य राजभाषा का प्रचार करना है। पाठकों की रुचि का ध्यान रखते हुए पठनीय सामग्री समाहित करने का प्रयास किया गया है कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास से पत्राचार लक्ष्य निरंतर कायम रखने तथा बढ़ाने की कोशिश जारी है।

राजभाषा हिंदी का अधिकतम उपयोग दैनिक जीवन में करना और हिंदी का सम्मान करना प्रत्येक भारतीय की संवैधानिक ज़िम्मेदारी है। देश की अपेक्षाओं का साधन नागरिक होते हैं और उनकी अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है।

वर्तमान सरकार का स्वदेशी भाषा के प्रति लगाव सकारात्मक है इससे आशा की किरण दिखाई दे रही है कि भविष्य में इसकी प्रगति में कोई बाधा नहीं आएगी क्योंकि एकबार सरकारी कार्य प्रणाली का रास्ता बदलने पर भविष्य का पथ निश्चित हो जाता है।

अरुण कुमार चान्द
महाप्रबंधक (मा.सं.)

एमडीएल का युद्धपोत निर्माण



जयंतिका मुखर्जी
राजभाषा अधिकारी

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड देश का प्रमुख शिपयार्ड है जो महाराष्ट्र के पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित है। यहाँ पर समुद्री तट के किनारे दलदली भूमि में एक सुखी गोदी का निर्माण मराठा शासन के दौरान हुआ था। प्रारंभ में यहाँ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों की मरम्मत होती थी। उस छोटी शुरुआत से माझगांव डॉक आज विशालकाय रूप में विकसित हुआ है और आज निरंतर बुनियादी सुविधाओं के विकास से वैशविक स्तर पर प्रतियोगिता करने में सक्षम है।

प्रारंभ में यहाँ लकड़ी के जहाज बनाए जाते थे। सन् 1817 में इस यार्ड में निर्मित "त्रिंकोमाली" नामक वुडेन बोट आज भी चलायमान अवस्था में इंग्लैंड के लीवर पूल में सुरक्षित है। इसका निर्माण वाडिया परिवार द्वारा किया गया था जो उस समय इस यार्ड के मुख्य प्रबंधक थे। इसके पहले पुर्तगाली शासको ने अपनी जहाजों की मरम्मत के लिए सन् 1630 के करीब सूरत में स्थापित किया था।

ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों की मरम्मत के लिए एक छोटे से सूखी गोदी के साथ सन् 1774 में यात्रा की शुरुआत हुई और तब से, विभिन्न स्वामित्वों से गुजरते हुए, अंततः एमडीएल 1960 में भारतीय नौसेना के लिए स्वदेशी रूप में युद्धपोतों का उत्पादन शुरू करने हेतु भारत सरकार के अधीन भारतीय जहाज निर्माण में एक नया अध्याय शुरू हुआ।

ब्रिटिश एडमिरल्टी से लाइसेंस के अंतर्गत बनाए गए छह लिएंडर श्रेणी युद्धपोत के साथ इस नए यात्रा की शुरूआत हुई। इस श्रेणी की पहली पोत, आईएनएस नीलगिरी की कमीशनिंग सन 1972 में हुई। लिएंडर श्रेणी के अनुवर्ती पोतों में :

- गोदावरी श्रेणी युद्धपोत
- खुखरी श्रेणी जलपोत
- 1241 आरई मिसाइल बोट
- प्रसिद्ध दिल्ली श्रेणी विध्वंसक
- शिवालिक श्रेणी स्टील्थ युद्धपोत
- कोलकाता श्रेणी स्टील्थ विध्वंसक शामिल हैं

जो एंटी सरफेस, एंटी एयर और एंटी–सबमरीन क्षमता के साथ एवं अत्याधुनिक हथियारों और सेंसर से लैस हैं।

निर्माण टाईमलाइन पर एक अवलोकन

एमडीएल यार्ड सं.	228	248	274	298	308	318
पोत का नाम	नीलगिरी	हिमगिरी	उदयगिरी	दुनागिरी	तारागिरी	विन्ध्यागिरी
एमडीएल को ऑर्डर दिया गया	जुलाई 65	सितंबर 67	सितंबर 67	जुलाई 70	जुलाई 70	जुलाई 70
को फैब्रिकेशन आरंभ किया गया	मई 66	जुलाई 68	अप्रैल 70	सितंबर 72	अप्रैल 75	जुलाई 76
नींव रखी गई	अक्टूबर 66	नवंबर 68	अगस्त 70	जनवरी 73	अक्टूबर 75	नवंबर 76
जलावतरण	अक्टूबर 68	मई 70	अक्टूबर 72	मार्च 74	अक्टूबर 76	नवंबर 77
कमीशनिंग	जून 72	नवंबर 74	फरवरी 76	मार्च 77	मई 80	जुलाई 81

लिएंडर परियोजना

भारत में आधुनिक युद्धपोत का निर्माण, लिएंडर परियोजना के साथ आरंभ हुआ। 23 अक्टूबर 1968 को वाटरशेड डे था क्योंकि उसी दिन भारत की सम्मानीय प्रधान मंत्री – श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस परियोजना के पहले पोत का जलावरण किया, जिसका नाम आईएनएस 'नीलगिरी' था। आईएनएस नीलगिरी की सुपुर्दगी 03 जून 1972 को श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। एमडीएल द्वारा कुल छह लिएंडर श्रेणी युद्धपोत का निर्माण किया गया।

दिल्ली श्रेणी

एमडीएल ने स्वदेशी जहाज निर्माण को उच्च स्तर पर लाने की कोशिश किया जिसमें तीन विध्वंसक बनाये गये। आईएनएस दिल्ली, दूसरा आईएनएस मैसूर, तीसरा आईएनएस मुंबई। ये जलयान उस समय भारत में निर्मित सबसे बड़े युद्धपोत हैं, ये युद्धपोत रिवर्सीबल (परिवर्तनीय) गैस टरबाईन द्वारा परिचलित हैं और इनमें सर्वोत्तम सी किपिंग गुणवत्ता है यद्यपि विषम मौसम की स्थिति में भी गतिशील रहते हैं। दिल्ली श्रेणी की जहाजों ने विश्व की सर्वोत्तम युद्धपोतो में अपना स्थान बनाया है।

शिवालिक श्रेणी

शिवालिक श्रेणी के तीन स्टील्थ युद्धपोत के निर्माण के साथ एमडीएल स्टील्थ पोतो के निर्माण में सक्षम शिपयार्डो के विशेष क्लब में शामिल हुआ। इन जहाजों में राडार क्रास सेक्शन के सम्बंध में फिजिकल सिग्नेचरर्स, इन्फ्रारेड एक्सपोजर, मैग्नेटिक दृश्यता, और अंडर वाटर न्वाइस तथा संकेत को न्यूनतम स्तर तक दबाया गया है। शिवलिक श्रेणी के पोतो की लम्बाई विश्व में सबसे अधिक है।

पी-15ए

परियोजना 15ए के अंतर्गत माझगांव डॉक तीन विध्वंसक कोलकाता, कोची और चेन्नई का निर्माण किया है। आईएनएस कोलकाता की कमीशनिंग अगस्त 2014 में माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया।

इस श्रृंखला की पहली पोत को आईएनएस कोलकाता नाम दिया गया है यह सबसे घातक युद्धपोत है जिसे भारतीय नौसेना में शामिल कर लिया गया है। इसके अनुवर्ती पोतों को कोलकाता श्रेणी कहा जाएगा। आईएनएस कोलकाता की सुपुर्दगी 16 अगस्त 2014 को किया गया। इसके बाद आईएनएस कोची की सुपुर्दगी 30 सितंबर 2015 को किया गया। आईएनएस चेन्नई पी15ए परियोजना के अंतर्गत तीसरा और आखिरी सबसे बड़ा पोत है जिसकी सुपुर्दगी 21 नवंबर 2016 को भारतीय नौसेना को की गई है।

हालांकि कोलकाता श्रेणी का रूपांकन और विशेषता की परिकल्पना भारतीय नौसेना ने किया था, लेकिन उसकी श्रेणी का विस्तृत रूपांकन क्रम एमडीएल द्वारा ही पूरा किया गया है। कोलकाता श्रेणी दिल्ली श्रेणी के मॉडल का अनुवर्ती है जो अधिक उन्नत और आधुनिक आयुध और सेंसर प्रणाली से सुसज्जित है। पोत की अधिकतम एकीकृत प्रणालियाँ भारत में रूपांकित और निर्मित हैं।

आईएनएस कोलकाता, कोलकाता श्रेणी के तीन गाइडेड मिसाइल स्टील्थ विध्वंसक में प्रथम है। जहाज की लंबाई 163 मीटर तथा विस्थापन क्षमता 7500 टन है जो भारतीय नौसेना द्वारा संचालित सबसे बड़ा स्वदेशीकृत युद्धपोत और विध्वंसक है। यह भारत के पोत निर्माण प्रौद्योगिकी में और क्षमता प्रदर्शन में एक

महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। यह अपने पूर्ववर्ती विध्वंसकों से और अधिक वरसिटाइल है, कोलकाता श्रेणी में शत्रु पनडुब्बी से लड़ने की सभी खूबियाँ हैं जैसे, सरफ़ेस वारशिप, एंटी शिप मिसाइल और फाइटर एयरक्राफ्ट आदि। इन स्वदेशी रूपांकित पोतों में स्टेट आफ आर्ट आयुध सेन्टर, स्टील्थ फीचर और अग्रिम कार्रवाई सूचना प्रणाली लगी हुई हैं। साथ ही इसमें एकीकृत प्लेटफार्म मैनेजमेन्ट प्रणाली विश्व स्तरीय माडूलर लिविंग स्पेस, परिष्कृत उर्जा वितरण प्रणाली और साथ ही अन्य अग्रिम विशेषताओं का समूह है। कोलकाता श्रेणी जहाज आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण का जीता जागता उदाहरण है। 472 बड़े और लघु औद्योगिक सांझेदारों ने अपनी ओर से अनोखे ढंग से जहाज निर्माण में योगदान दिया है। यह स्वदेशीकृत प्रयास मूलतः भारतीय नौसेना और रक्षा उत्पादन विभाग के सक्रिय प्रयत्नों का ही सुफल है जिसके कारण यह कोशिश कामयाब हुई है।

इस श्रेणी के पूरा होने से ये तीनों 15ए श्रेणी विध्वंसक, भारतीय नौसेना के मुख्य संबल होंगे।

परियोजना 15बी (ब्रावो)

परियोजना 15बी के अंतर्गत इन विध्वंसकों के आगामी आदेश एमडीएल को प्राप्त हो चुके हैं और पहले दो पोतों का उत्पादन भी शुरू हो चुका है।

पी15बी परियोजना की चर्चा करते हैं यह पी15ए रूपांकन का अनुवर्ती है। जिसके अंतर्गत चार युद्धपोतों का निर्माण हो रहा है। इसमें इस परियोजना के पहले युद्धपोत का जलावतरण 20 अप्रैल 2015 को किया गया जिसका नाम आईएनएस विशाखापतनम रखा गया है। एमडीएल भारतीय नौसेना द्वारा अपने पी15 ब्रावो श्रेणी गाइडेड मिसाइल स्टील्थ विध्वंसक, आईएनएस विशाखापत्तनम और आईएनएस मोरमुगाओ के पहले और दूसरे पोत की कमीशनिंग क्रमशः 21 नवंबर 2021 और 18 दिसंबर 2022 को किया है। तीसरा विध्वंसक इम्फाल आउटफिटिंग के अग्रिम चरण में है और चौथा विध्वंसक सूरत 17 मई, 2022 को जलावतरण किया गया था।

इस श्रेणी के पोतों की भूमिका गहरे समुद्र में विविध प्रकार के खतरों पर नियंत्रण करने के लिए कार्य दल के साथ संयोजन करना है।

ये वारफेयर में आक्रमण करने में सक्षम होंगे जिसमें किनारे पर स्थित लक्ष्यों को निशाना बना सकते हैं और दुश्मन के विमानों, पनडुब्बियों और सतह पर स्थित पोतों के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।

ये पोत 42 दिनों के लक्ष्य को पूरा करने में समर्थ हैं। इसमें सभी मशीनरी, सेंसर और उपकरणों की अधिकतम निर्भरता और उक्त कथित दिनों के लक्ष्य को कायम रखने में सहायक होंगे। पोत का अंडर वाटर हल फार्म पी15ए के समान है।

इसके अलावा, एमडीएल एकीकृत निर्माण पद्धति का उपयोग करते हुए, चार अत्यधिक जटिल पी17 अल्फा श्रेणी स्टील्थ युद्धपोत का निर्माण भी कर रहा है। इस श्रेणी की पहली पोत, नीलगिरी का जलावतरण, 28 सितंबर, 19 को किया गया था और अब इसे आउटफिटिंग किया जा रहा है। दूसरे और तीसरे पोत उदयगिरि और तारागिरी को क्रमशः 17 मई 2022 और 11 सितंबर 2022 को जलावतरण किया गया है। चौथे पोत की नींव 28 जून 2022 को रखी गई थी। इसके अलावा, वे भारतीय नौसेना के इन–हाउस संगठन नौसेना डिजाइन निदेशालय द्वारा स्वदेशी रूप से डिजाइन किए गए हैं और माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा निर्मित हैं।

तकनीकी सेवा (टीएस) विभाग : एक संक्षिप्त परिचय



रितु राज सिंह
उप प्रबंधक (त.से–वाणिज्य)

तकनीकी सेवा माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के अलकॉक खंड में प्रथम मंजिल पे स्थित है। तकनीकी सेवा निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) विभाजन के अंतर्गत आता है। तकनीकी सेवा के विभागाध्यक्ष मुख्यता महाप्रबंधक अथवा कार्यकारी निदेशक पद के अधिकारी होते है। आज का तकनीकी सेवा (टीएस) विभाग पूर्व में इन्फ्रा प्रोजेक्ट्सव (ई.पी), कैपिटल वर्क्स (सी.व) अथवा माझगांव मॉडर्नज़ेसन प्रोजेक्ट के विलयन एवं मिश्रण से बना है।

तकनीकी सेवा (टीएस) विभाग एमडीएल में महत्वपूर्ण विभागों में से एक है जो आवश्यक बुनियादी ढांचा और आधुनिकीकरण प्रदान करके उत्पादन विभाग की मौजूदा सुविधाएं को समर्थन करता है। इसके संचालन के व्यापक क्षेत्र में उत्तर यार्ड, दक्षिण यार्ड, पूर्व यार्ड, अलकॉक यार्ड और एमडीएल शामिल हैं अनिक चेंबूर, डॉकयार्ड परिसर और नवी मुंबई में स्थित आवासीय क्षेत्र भी शामिल हैं। उपरोक्त के अलावा, रायगढ़ में न्हावा शेवा यार्ड और गावन के पुनर्विकास भी तकनीकी सेवा द्वारा किया जा रहा है।

इस समय तकनीकी सेवा (टीएस) विभाग के विभागाध्यक्ष श्री बी के सिन्हा, महाप्रबंधक है। तकनीकी सेवा (टीएस) विभाग के टीम कुल 26 अधिकारीयों का है।

त.से विभाग मुख्य रूप से निम्नानुसार सात खंडों में विभाजित है :

* **योजना (Planning) अनुभाग :**

संपूर्ण एमडीएल के लिए CAPEX के लिए समन्वय, MoD, लोकसभा, राज्यसभा के लिए, प्रबंधन के लिए अन्य विविध पत्राचार , प्रस्तुतियाँ, आदि।

* **वाणिज्यिक (Commercial) :**

निविदा, वाणिज्यिक मूल्यांकन, टीएनसी, पीएनसी, ऑर्डर देना, बिलिंग, सतर्कता रिपोर्ट, आंतरिक लेखा /आईईएम द्वारा उठाए गए प्रश्नों का उत्तर देना, जब भी आवश्यक हो खरीद नियमावली (पुर्चासे Manual) में संशोधन का प्रस्ताव आदि।

* **क्रियान्वयन (Execution) :**

लागत अनुमान तैयार करना, सीटीए (CTA) अनुमोदन प्राप्त करना, साइट पर्यवेक्षण, सह–उपयोगकर्ता, सलाहकार के बीच समन्वय, मेज़रमेंट बुक में काम का अभिलेख करना, ठेकेदार के कार्यों का बिलिंग करना।

* **यार्ड अनुरक्षण प्रकोष्ठ (YUC) :**

पूरे एमडीएल में नियमित हाउसकीपिंग और लैंडस्केपिंग/उद्यान रखरखाव (पू. खं. और भाग अलकोक को छोड़कर), स्क्रैप आदि का निपटान।

* **केंद्रीय रखरखाव सेवाएं (CMS) :**

आपातकालीन कार्य सहित–प्लंबिंग, पेंटिंग, बढ़ईगीरी, राजगीरी एमडीएल में सभी लिफ्ट के लिए एएमसी (AMC), कीट नियंत्रण प्रणाली, पेंटिंग, विद्युत कार्य, मुंबई में आवासीय क्वार्टरों में पानी के टैंक की सफाई, रोलिंग शटर का मरम्मत, वाशी, सानपाड़ा, बेलापुर यार्ड आवासीय क्वार्टरों में सिविल कार्य, अन्य विविध आवश्यकताएं, पीआर (PR) बढ़ाना और वित्तीय

स्वीकृति (राजस्व) प्राप्त करना, बीएमसी के साथ संपर्क करना।

* **द्विवार्षिक दर अनुबंध (BRC) :**

सिविल और इलेक्ट्रिकल – साइट पर्यवेक्षण, सह–उपयोगकर्ता, सलाहकार और ठेकेदार के बीच समन्वय, माप एवं प्रमाणीकरण, बीआरसी कार्यों के लिए बिलिंग।

* **स्वास्थ्य, सुरक्षा और पर्यावरण मानक प्रकोष्ठ (HSE) :**

एमडीएल में एचएसई मानकों का कार्यान्वयन मैनुअल तैयार करना, आंतरिक ऑडिट आयोजित करना, जागरूकता प्रदान करना, बाहरी प्रमाणन एजेंसी के साथ समन्वय करना आदि।

गत वर्षों में तकनीकी सेवा विभाग की प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित प्रकार है:

क) न्हावा यार्ड का उद्घाटन:

मई 2019 में सचिव डीपी द्वारा न्हावा यार्ड का उद्घाटन किया गया। इस परियोजना में शामिल हैं परियोजना कार्यालय, कार्यशाला, आंतरिक सड़कों, सीआईएसएफ आवासों का नवीनीकरण,औषधालय आदि। उपरोक्त के लिए किया गया कुल व्यय लगभग 5 करोड़ रुपये है।

गव्हान की जमीन पर फेंसिंग और बाउंड्री वाल का निर्माण भी पूरा हो चुका है और इस कार्य में लगभग 2 करोड़ रुपये की राशि की लागत आई है।

ख) माझडॉक हाउस फसाड:

करीब 12 करोड़ रुपये राशि के लागत से माझडॉक हाउस बिल्डिंग का नवीकरण एवं सरंचनात्मक मजबूती प्रदान की गई।

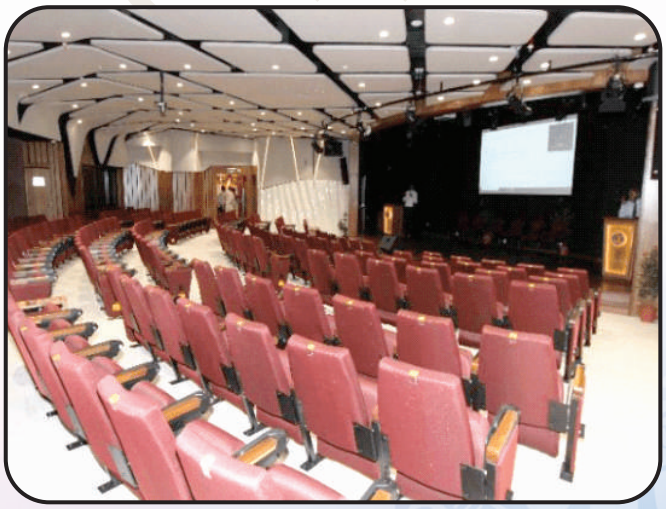
ग) हेरिटेज गैलरी:

सितंबर 2019 में हेरिटेज गैलरी का निर्माण और उद्घाटन आरएम (RM) द्वारा किया गया। व्यय खर्च लगभग 2 करोड़ रुपये है।

घ) सागरिका सभागार का उद्घाटन:

मई, 2019 में 7वीं मंजिल, न्यू सर्विस ब्लॉक में सागरिका सभागृह का उद्घाटन किया गया है। इसमें 180 कर्मियों के बैठने की क्षमता है। इसमें शानदार परफॉर्मेंस लाइटिंग सिस्टम, एड्रेसेबल फायर अलार्म सिस्टम, ऑडियो विजुअल सिस्टम आदि। यह कार्य लगभग 5.57 करोड़ रुपये की लागत से पूरा किया गया है।





ड) रिची ड्राई डॉक के पास सड़क का पक्काकरण :

रिची ड्राई डॉक के पास सड़क के कंक्रीटीकरण का ऑर्डर 2.65 रुपये में दिया गया है और मैसर्स पीयूष एंटरप्राइजेज द्वारा परियोजना को समय विधि में समाप्त किया गया।

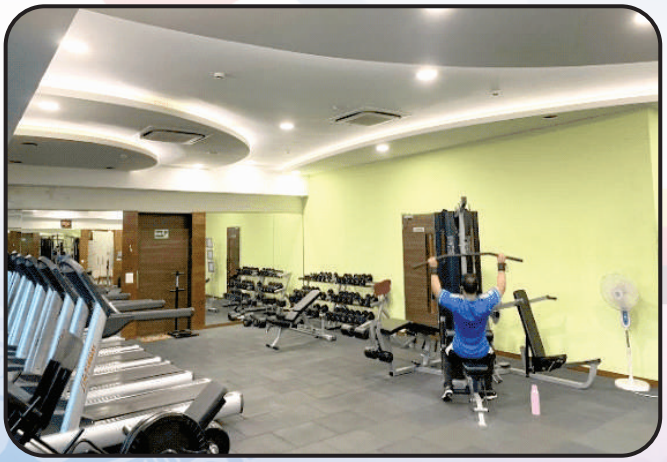
च) ईस्ट यार्ड में वर्कशॉप सी के नीचे पाइल्स/आरसीसी संरचनाओं का सुदृढ़ीकरण :

वर्कशॉप सी के नीचे पाइल्स/आरसीसी संरचनाओं का सुदृढ़ीकरण मई 2019 में पूरा किया गया है। परियोजना का कुल लागत लगभग 11.50 करोड़ रुपये था।

छ) एमडीआरसी (MDRC) जिम्नेजियम का नवीनीकरण

वर्ष 2019 में एमडीआरसी जिम्नेजियम एवं लाइब्रेरी का नवीनीकरण किया गया।





ज) आयाम स्पोर्ट्स डेक (पूर्व में MDRC टेनिस कोर्ट) का निर्माण :

इंटरलॉकिंग PP टाइल्स के प्रयोग एवं आधुनिक तकनीक के प्रयोग से वर्ष 2021 में आयाम स्पोर्ट्स डेक का काम सपन्न हुआ।



एमडीएल आवासीय कॉलोनी परिसर में स्पोर्ट्स डेक का निर्माण

झ) अंग्रे हाउस 17-18 मंजिल में गेस्ट हाउस का निर्माण





जनवरी 2022 एमडीएल आवासीय परिसर में स्थित गेस्ट हाउस का उद्घाटन

ट) पनडुब्बी प्रक्षेपण सुविधा (SLF) का उद्घाटन :

अलकॉक खंड में स्थित SSA शॉप के निकट पनडुब्बी प्रक्षेपण सुविधा (SLF) का 17 जनवरी 2023 को वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम भानो (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक के कर-कमलों द्वारा लोकार्पण किया गया।





वर्तमान में चल रहे एवं भविष्य में तकनीकी सेवा विभाग में आने वाले महत्वपूर्ण आधुनिकीकरण परियोजनाएँ :

i) एमडीएल औषधालय का आंशिक परिवर्तन एवं मरम-मत वर्तमान में चल रहे परियोजनाएँ

ii) सिक्यूरिटी कॉम्प्लेक्स का निर्माण वर्तमान में चल रहे परियोजनाएँ

iii) अलकॉक खंड में सेंट्रलाइज्ड किचन का निर्माण वर्तमान में चल रहे परियोजनाएँ

iv) दक्षिण खंड में नए एलएल क्रेन का ट्रैक 9,10 एवं 11 का रचना एवं निर्माण वर्तमान में चल रहे परियोजनाएँ

v) एमडीएल के मुंबई स्थित आवासीय क्षेत्र में टूटी हुई रोड का निर्माण कार्य वर्तमान में चल रहा है।

vi) गवान लैंड का विकास, प्लाट नं. 12ए, सेक्टर नं-8, नोड - उलवे, नवी मुंबई भविष्य में आने वाली परियोजनाएँ

vii) सुरक्षा परिसर भवन में सुरक्षा प्रणाली गैजेट्स/उपकरणों की आपूर्ति, स्थापना, परिक्षण और कमीशनिंग आदि भविष्य में आने वाली परियोजनाएँ हैं।

viii) एमडीएल के मुंबई स्थित आवासीय क्षेत्र में चिल्ड्रेन पार्क का निर्माण भविष्य में आने वाली परियोजनाएँ

ix) एमडीएल के नार्थ यार्ड में कसारा डॉल्फिन जेट्टी कि मजबूतीकरण एवं मरम्मत का कार्य भविष्य में आने वाली परियोजनाएँ

x) एमडीएल के पहिली मंजिल मुगलहाउस/दक्षिण यार्ड कैन्टीन को डारमेट्री एवं गैलरी स्पेस में परिवर्तित कराने का कार्य भविष्य में आने वाली परियोजनाएँ

अंततः मेरा मूल उद्देश्य आप सबके बीच तकनीकी सेवा विभाग का संक्षिप्त परिचय देना था। किस तरह तकनीकी सेवा विभाग के अधिकरी नित–दिन एमडीएल के महत्वपूर्ण आधुनिकीकरण परियोजनाओं को साकार करने में लगे हुए है। रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत रक्षा उत्पादन विभाग द्वारा दिए गए समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू) के तहत पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) का लक्ष्य प्राप्त करने में तकनीकी सेवा विभाग का अहम योगदान है। तकनीकी सेवा विभाग एमडीएल को नए आधुनिकरण परियोजनाओं के द्वारा और सक्षम, सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के कार्य में लगा हुआ है। नए आधुनिकरण परियोजनाओं से एमडीएल को अपने लक्ष्य ''गुणवत्तापूर्ण जहाजों की निर्धारित लागत में समय पर सुपूर्दगी करना और युद्धपोत निर्माण में विश्व में अग्रणी बने रहना'' में आसानी होती है।



दिनेश नारायण मढवी
इलेक्ट्रिकट्रॉनिक मकेनिकल (इलेक्ट्रिक और वेपन)

माझगांव डॉक एक 'सुरक्षा कवच'

हम माझगांव डॉक के समर–वीर है।
लोहे से हम 'मजबूत' देश का निर्माण करते हैं।
'भारत बलशाली हो' ये क्रांतिवीरों का सपना था,
ये सपना आज हम पूरा करते हैं।।1।।

जीवन का ध्येय हम सफलता रखते हैं।
'कर्म' का दीप लेकर 'सुरक्षा' की पूजा करते हैं।
निडर–निर्भय होकर हम,
'सुरक्षा–क्रांति' का निर्घोष करते है।।2।।

उजागार है हम, पनडुब्बी–युद्धपोत के,
देश के सुरक्षा को 'नया आकार' देते हैं।
'जुगनू' बनकर चमक उठे हैं हम 'एक साथ'
देश का नाम, जग में रोशन करते हैं।।3।।

अरब सागर की हवा हमारी 'शौर्य–गाथा' गाती है,
सूरज कि हर एक किरण हमारी 'अलग पहचान' बनाती है।
मीठा–पानी जिंदगी है सबकी,
समुंदर के पानी को हम अपनी जिंदगानी बनाते है।।4।।

अरमान लेकर समुंदर में हम उतरते हैं।
हौसलों की तरकश में समुंदर पर आशियाना बनाते हैं।
बाजुओं की ताकद और मन का विश्वास
हमेशा साथ रखते हैं।।5।।

'रक्षणाय: राष्ट्र:' यही हमारा 'राजमुकुट' है।
हमने देश में एक नया इतिहास बनाया है।
भारत देश का अनमोल 'तिरंगा' बड़े शान से लहराया है।
'क्रांति के साथ शांति' का भी हम संदेश देते हैं।।6।।

हिंदी साहित्य में गोस्वामीजी का स्थान



सुबोध जाधव
फिटर (जनि–विद्युत रिपेयर)

जो कुछ लिखा जा चुका, उससे तुलसीदासजी की विशेषताएँ कुछ न कुछ अवश्य स्पष्ट हुई होंगी। काव्य के प्रत्येक क्षेत्र में हमने उन्हें उस स्थान पर देखा, जिस स्थान पर उस क्षेत्र का बड़े से बड़ा कवि है। मानव अन्त:करण की सूक्ष्म से सूक्ष्म वृत्तियों तक हमने उनकी पहुँच देखी। बाह्य जगत के नाना रूपों के प्रत्यक्षीकरण में भी हमने उन्हें तत्पर पाया। काव्य के बहिरंग विधान की सुन्दर प्रणाली का परिचय भी हमें मिला। अब उनकी सबसे बड़ी विशेषता की ओर एक बार फिर ध्यान आकर्षित करके यह वक्तव्य समाप्त किया जाता है।

यह सबसे बड़ी विशेषता है उनकी प्रबन्धपटुता जिसके बल से आज 'रामचरितमानस' हिंदी समझनेवाली हिंदू जनता के जीवन का साथी हो रहा है। तुलसी की वाणी मनुष्य का जीवन की प्रत्येक दशा तक पहुँचनेवाली है; क्योंकि उसने रामचरित का आश्रम लिया है। रामचरित जीवन की सब दशाओं की समष्टि है, इसका प्रमाण 'रामाज्ञाप्रश्न' है जिसने लोग हर एक प्रकार की आनेवाली दशा के समबंध में प्रश्न करते और उत्तर निकालते हैं। जीवन की इतनी दशाओं का पूर्ण मार्मिकता के साथ जो चित्रण कर सका, वही सबसे बड़ा भावुक और सबसे बड़ा कवि है, उसी का हृदय लोक हृदय स्वरूप है। श्रृंगार, वीर आदि कुछ गिने गिनाए रसों के वर्णन में ही निपुण कवि का अधिकार मनुष्य की दो एक वृत्तियों पर ही समझिए, पर ऐसे महाकवि का अधिकार मनुष्य की सम्पूर्ण भावनात्मक सत्ता पर है।

अत: केशव, बिहारी आदि के साथ ऐसे कवि को मिलान के लिए रखना उसका अपमान करना है। केशव में हृदय का तो कहीं पता नहीं। वह प्रबंधपटुता भी उनमें नाम को नहीं जिससे कथानक का सम्बन्ध निर्वाह होता है। उनकी रामचन्द्रिका फुटकर पद्यों का संग्रह सी जान पड़ती है। वीरसिंहदेवचरित में उन्होंने अपनी हृदयहीनता की ही नहीं, प्रबंधरचना की भी पूरी असफलता दिखा दी है। बिहारी रीति ग्रंथों के सहारे जबरदस्ती जगह निकाल निकालकर दोहों के भीतर श्रृंगाररस के विभाव, अनुभाव और संचारी ही भरते रहे। केवल एक ही महात्मा और हैं जिनका नाम गोस्वामीजी के साथ लिया जा सकता है और लिया जाता है। वे हैं प्रेमस्त्रोतस्वरूप भक्तवर सूरदासजी। जब तक हिंदी साहित्य और हिंदीभाषी हैं, तब तक सूर और तुलसी का जोड़ा अमर है। पर जैसा कि दिखाया जा चुका है, भाव और भाषा दोनों के विचार से गोस्वामीजी का अधिकार अधिक विस्तृत है। न जाने किसने 'यमक' के लोभ से यह दोहा कह डाला कि 'सूर, सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास'। यदि कोई पूछे कि जनता के हृदय पर सबसे अधिक विस्तृत अधिकार रखनेवाला हिंदी का सबसे बड़ा कवि कौन है तो उसका एक मात्र यही उत्तर ठीक हो सकता है कि भारतहृदय, भारतीकंठ, भक्तचूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास।

हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा और जनभाषा



सिमनलाल आर्य
सहायक (राजभाषा अनुभाग)

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र, प्रभुसत्ता संपन्न गणराज्य है। भाषा विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम मात्र नहीं होती अपितु राष्ट्र की पहचान भी होती है। राष्ट्र के मूलभूत तत्वों में राष्ट्रीय संविधान, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान की ही तरह राजभाषा का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा और जनभाषा इन तीनों रूपों में चर्चा का विषय रही है। हमारे देश में हिंदी सदियों से राज–काज में उपयोग में लाई जाती रही है।

आप हम सबको मालूम है कि देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली हिंदी को संविधान सभा में हुए विचार–विमर्श के बाद 14 सितंबर 1949 को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू होने पर यह भारत की राजभाषा बनी और हिंदी को भारत सरकार द्वारा संघ की राजभाषा का दर्जा प्राप्त है।

राजनीतिक क्षेत्र में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका

लोकतंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि जनभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग हो। लोक प्रतिनिधियों को जनता से सीधा संपर्क स्थापित करना होता है जिसमें भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हिंदी सदियों से एकता का सबल माध्यम रही है। स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में भी हिंदीतर भाषी सेनानियों ने भी हिंदी को अपनाया और देश के कोने – कोने से हिंदी के माध्यम से आपसी संपर्क स्थापित किया। वर्तमान समय में भी हम देखते हैं कि लोकसभा और विधानसभा के चुनावों के दौरान अधिकांश उम्मीदवार हिंदी के माध्यम से ही जन–जन तक अपनी बात पहुंचाते हैं और चुनाव जीतने के बाद भी संसद और विधान सभाओं में चर्चा सत्रों में हिंदी का प्रयोग करते हैं। जनधन, मनरेगा, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी सरकारी योजनाओं की जानकारी अधिकतर राजनीतिज्ञों द्वारा हिंदी में ही जनता को पहुंचाई जाती है।

बहुत से जन प्रतिनिधियों ने जिक्र किया है कि उनके राजनीतिक जीवन में सफलता के पीछे हिंदी की बहुत बड़ी भूमिका रही है। माननीय प्रधानमंत्री गण – स्वर्गीय मोरारजी देसाई, स्वर्गीय पी.वी. नरसिम्हा राव एवं वर्तमान में श्री नरेंद्र मोदी जी इसके ज्वलंत उदहारण हैं। राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति माननीय वेंकैया नायडू, लोकसभा अध्यक्ष एवं अनेक केन्द्रीय मंत्रियों, श्री धर्मेंद्र प्रधान, श्री अमित शाह आदि के नाम इसमें सम्मिलित हैं।

विदित है कि पहले स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जैसे बहुत कम राजनीतिज्ञों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में संबोधित किया था। आज हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भूटान से जापान तक,

आस्ट्रेलिया से अमेरिका तक, इंग्लैंड से हालैंड तक हिंदी में भाषण देकर वैश्विक स्तर पर हिंदी की साख बढाई है और अनेक राष्ट्राध्यक्षों से हिंदी में संवाद स्थापित करके मैत्रीपूर्ण संबंधों को प्रगाढ़ किया है। उनका ह्यूस्टन टेक्सास में हाउडी मोदी कार्यक्रम में हिंदी भाषण जगजाहिर है।

व्यवसाय एवं बाजार में हिंदी:

यह अक्षरश: सत्य है कि व्यवसाय एवं बाजार में हिंदी की भूमिका में निरंतर वृद्धी हो रही है। अब यह सरकारी फाइलों और दस्तावेजों से निकलकर आम जनता के मोबाइल और कंप्यूटर में पहुंच रही है। दूरदर्शन एवं इंटरनेट पर अपना परचम लहरा रही है। बातचीत में नई ऊर्जा का संचार कर रही है और महानदी की तरह आगे बढ़ रही है। व्यवसाय से जुड़े अधिकांश लोग भी अपने व्यवसाय के लिए बोलचाल में हिंदी का प्रयोग करते हैं। भारत के बड़े बाजार को देखते हुए अंतरराष्ट्रीय कंपनियां भी हिंदी को अपना रही हैं और विश्वग्राम की संकल्पना में हिंदी अपनी जड़े जमा रही है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की वर्तमान स्थिति

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की विश्व यात्रा भी जारी है। हिंदी केवल भारत की ही नहीं बल्कि यह एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। हिंदी विश्व के 100 से अधिक देशों में अपना स्थान बना चुकी है और 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन, अध्यापन होता है। मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय का मुख्यालय है जहाँ से विश्व भाषा के रूप में हिंदी का प्रचार–प्रसार होता है।

विकसित देशों में हिंदी:

प्राचीन कल से ही भारतीय मूल के निवासी रोजगार, व्यापर और उद्योग में हैं। इसके लिए ब्रिटेन से लेकर चीन, जापान, रूस, अमेरिका, आस्ट्रेलिया और अफ्रीका देशों में रहते हैं। इनमें से अधिकांश लोग पीढ़ियों से वहीं बस गए हैं और बहुत से लोग अनिवासी भारतीयों के रूप में रह रहे हैं। वे अपने साथ भारतीय भाषाएँ और संस्कृति को भी संजोए रहे। इस प्रकार हिंदी विकसित देशों में भी पुष्पित और पल्लवित होती रही है।

मानसिक अवरोध:

सरकार द्वारा दिशा – निर्देशों के अनुसार वर्तमान में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में हिंदी प्रगति को बढ़ावा देने तथा प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से हिंदी में काम करने के लिए निम्नलिखित पुरस्कार/प्रोत्साहन योजना हैं।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है। जिसमें संस्थान में हिंदी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। सूचना प्रणाली में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए ऑन–लाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाता है। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं में विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों को आकर्षक पुरस्कार दिए जाते हैं।

कार्यशालाओं का आयोजन: संस्थान के अंदर वर्ष में 4 बार हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिसमें राजभाषा नीति, नियम के अलावा

राजभाषा संबंधी अन्य आयामों पर चर्चा की जाती है।

हिंदी पुस्तकालय: संस्थान के दक्षिण खंड मुगल हाउस में हिंदी पुस्तकालय स्थापित है जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों को नि:शुल्क हिंदी किताबें, पत्रिकाएं, आदि उपलब्ध कराई जाती हैं।

भारत सरकार की राजभाषा नीति का पालन करते हुए माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रवीण, प्रज्ञा और पारंगत प्रशिक्षण दिया जाता है। परीक्षा में 60% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उत्तीर्ण होने पर प्रोत्साहन राशी दी जाती है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में हिंदी प्रगति को बढ़ावा देना तथा प्रचार–प्रसार देने के उद्देश्य से हिंदी पत्रिका जलतरंग का प्रकाशन किया जाता है। उत्तम एवं श्रेष्ठ लेखकों की रचनाओं को पत्रिका में प्रकाशित तथा पुरस्कृत किया जाता है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में हिंदी में सर्वाधिक टाईपिंग करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विशेष टंकण प्रथम, द्वितीय, तथा तृतीय पुरस्कार दिये जाते हैं।

भारत सरकार की राजभाषा नीति का पालन करते हुए माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में राजभाषा की ओर से निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से सभी लिपिक वर्ग को अधिकतम हिंदी में पत्राचार करने के लिए पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के आदेशानुसार माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के सभी प्रभागों के आशुलिपिकों एवं टंककों को अपने कार्यालयीन कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए नकद राशी प्रदान कर प्रोत्साहित की जाती है। यह राशी उन आशुलिपिकों/टंककों को प्रदान की जाती है जो अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में भी अपना कार्य करते हैं। राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी में औसतन 5 पत्र या प्रति तिमाही 300 पत्र टाइप करने पर आशुलिपिकों को प्रतिमाह रूपये 300/– तथा टंककों को प्रतिमाह रूपये 150/– की राशि प्रोत्साहन के रूप में प्रदान करने का प्रावधान है।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। समय के साथ राजभाषा का स्वरूप और प्रयोग बदलता रहा है। आज हिंदी की दुनिया में शांतिपूर्ण क्रांति आ रही है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ हिंदी ने अपनी पहुंच न बनाई हो। देश–विदेश व्यापार, व्यवसाय हर जगह हिंदी ने उपस्थिति दर्ज की है।

परंतु यह एक कड़वा सच है कि कुछ लोग जिसमें हिंदी भाषी भी शामिल हैं, हिंदी को अंग्रेजी की तुलना में कम महत्व देते हैं और हिंदी में काम करने में झिझक महसूस करते हैं। जबकि राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में सरकारी नीतियों और आदेशों – निर्देशों की कमी नहीं है। फिर भी अभी तक हिंदी का प्रयोग उस उच्च गति को प्राप्त नहीं कर सका जिसकी हमारे संविधान निर्माताओं ने अपेक्षा की थी।

धन्यवाद सहित प्रणाम!

सोच बदलो



प्रसाद कुलकर्णी
उप कार्यालय अधीक्षक (एमडीसी)

विविधता की दृष्टिकोण से अगर देखा जाए तो माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड हमारे देश का छोटा प्रतिरूप है। हमारे देश के विभिन्न भागों से विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक और वैचारिक पृष्ठभूमि से लोग यहां कर्मचारियों के रूप में आते है और इस परिवार के सदस्य बन जाते हैं। इस प्रकार वर्षों से हमारा एमडीएल सांस्कृतिक मूल्यों और विचारों की दृष्टि से एक बहुआयामी परिवार बन गया है। इसके अलावा यहा काम की विभिन्न संरचना के कारण, कर्मचारियों की सोच और मनोवृत्ति अलग अलग होती है। यह भी देखा गया कि वर्षों से काम करने के बावजूद कई कर्मचारी एमडीएल की समृद्ध इतिहास से अनभिज्ञ हैं। इस प्रकार की कमियों को दूर करने और उन्हें एमडीएल की मुख्य धारा में लाने के लिए, एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता महसूस हुई। जिस के कारण इन बाधाओं का निराकारन होगा और एमडीएल की प्रगति की दिशा में उन्हें एकजुट करने में मदद मिलेंगी। इसी उद्देश्य के साथ, व्यवस्थापन विकास केंद्र ने एक पूरे दिन का कार्यक्रम डिजाइन किया, जिसमें मनोवृत्ति परिवर्तन, जहाज निर्माण उद्योग की वर्तमान स्थिति, इंजीनियरिंग उद्योग में उभरती टेक्नॉलॉजी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन सत्रों का अंतर्भाव था। इस कार्यक्रम का नाम 'सोच बदलो' रखा गया। कंपनी के 'सागरिका' ऑडिटोरियम में अब तक इस कार्यक्रम के लगभग 50 बैच सम्पन्न हुए है। गौरव की बात है कि ये कार्यक्रम केवल मौजूदा अंदरूनी संसाधनों और वक्ताओं के माध्यम से आयोजित किए गए थे और वे प्रतिभागियों द्वारा बेहद उत्साह के साथ सराहे गए हैं।



सोच बदलो कार्यक्रम में प्रतिभागीगण

'सोच बनाओ'

एमडीएल की कार्य संस्कृति में 'इनोवेशन' की शुरुआत होने के बाद अधिकारियों से ये अपेक्षा की जाने लगी कि वे सभी व्यावसायिक निर्णयों के बारे में इनोवेटर के रूप में लीड करें। हर अधिकारी, चाहे उसका रैंक कुछ भी हो, हमेंशा अपनी टीम का लीडर होता हैं। टेक्नोलॉजी में निरंतर बदलाव के साथ एमडीएल इन अधिकारियों के माध्यम से जहाज निर्माण के क्षेत्र में आए विभिन्न बदलाव आत्मसात कर रहा है। ये अधिकारी अपने प्रतिभाशाली कर्मचारियों की मदद से ये नवोन्मेषी अधिकारी एमडीएल को देश का अग्रणी शिपयार्ड बना सकते हैं। अधिकारियों को प्रेरित करने के लिए, 'सोच बदलो' के अनुरूप एक समान कार्यक्रम शुरू करना आवश्यक समझा गया। इस प्रकार एमडीसी ने अधिकारियों के लिए 'सोच बनाओ' नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम के 5 बैचों का आयोजन किया। इस कार्यक्रमर में जहाज निर्माण उद्योग के व्यावसायिक परिदृश्य, प्रेरक कार्यस्थल, एक प्रेरक नेता के रूप में स्वयं को विकसित करने के लिए न्यूरो लंग्वेस्टिक प्रोग्रामिंग (एनएलपी) का उपयोग, आदि सेशनों को अन्तर्भूत थे। उक्त कार्यक्रम की अधिकारियों ने काफी सराहना की।



फॅमिली बिल्डिंग कार्यक्रम

यह अक्सर देखा गया है कि कर्मचारी अपने जीवनकाल में व्यावसायिक और व्यक्तिगत तौर पर ज्यादा दोस्त बना नहीं पाते हैं। इसका अंदाजा उनके मोबाइल फोन में सेव फोन नंबर की संख्या और उनके फेयरवेल समारोह में शामिल होने वाले कर्मचारी संख्या से लगायी जाती है। एमडीएल एक बड़ा संगठन होने के कारण एक विभाग के कर्मचारियों को अक्सर अन्य विभागों के कर्मचारियों से परिचित होने का मौका नहीं मिलता है। यह देखा गया है कि यहाँ जॉइन होनेवाला कर्मचारी अपने पूरे कार्यकाल में ढेर सारे सहकर्मियों से अनजान रहकर ही रिटायर हो जाता हैं। इसका मूल कारण यह है कि वे अपनी बुनियादी आवश्यकता, जैसे की वेतन के अलावा किसी अन्य बातों में रुचि नहीं रखते। यह उन्हें अधिक आत्मकेंद्रित और आत्मोन्मुख बनाता है। इस से किसी भी संगठन के संदर्भ में उस के विकास के लिए आवश्यक समूह गतिशीलता धीरे–धीरे खो जाती है। उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए, कर्मचारियों के लिए बेहतर मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के माध्यम से आपस में पारिवारिक सामंजस्य लाने के लिए एक फॅमिली बिल्डिंग कार्यक्रम विकसित करने का विचार किया गया। यह एक दिवसीय आउटबाउंड कार्यक्रम आरसीएफ प्रशिक्षण केंद्र अलीबाग में आयोजित किया गया है। संगठनात्मक व्यवसाय की सफलता के लिए टीम निर्माण की बुनियादी आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, कर्मचारियों को सुविधा प्रदान करने के लिए इसे उद्देश्यपूर्ण तरीके से बाहर रखा गया था।



लाइफ विजन आर्किटेक्ट

सामान्य तौर पर व्यावसायिक उत्कृष्टता के लिए कर्मचारियों को बाहरी रूप से विकसित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाए जाते हैं। हालाँकि, इसे तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कर्मचारी को आंतरिक रूप से विकसित किया गया हो। उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए, 'जीवन विद्या मिशन' कर्जत में 'लाइफ विजन आर्किटेक्ट' नामक एक आउट डोर कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक कर्मचारी को उसके आंतरिक क्षमता का एहसास कराना है जो उसे एक इंसान के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह करने के लिए ईश्वर ने प्रदान की है। इसलिए, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को दो दिवस के चार सेशन में तैयार किया गया है, जिसे अंतर्मन – बाह्यमन, दिव्य प्रकृति का नियम, मानव शरीर के भौतिक संसाधन और मोक्षप्राप्ति की दिशा में बढ़ने के लिए प्यार में शामिल किया गया है। कई कॉर्पोरेट्स ने अपने कर्मचारियों को उन के जीवन को खूबसूरती से विकसित करने के लिए आंतरिक रूप से खुद को पुनर्गठित करने की सुविधा के लिए अपने कर्मचारियों को इस मिशन में भेजा है। ये पहल संगठन को ऐसे कर्मचारी बनाने में मदद करेगी जो अपना काम 100% क्षमता से कर सके और कंपनी के व्यवसाय वृद्धि में मदद करें।



एनडीडीबी का दौरा

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) एक ऐसा संगठन है जिसने किसानों के सहकारी आंदोलन के माध्यम से देश, समाज और स्वयं को उन्नत बनाने में बड़ा योगदान दिया है। एनडीडीबी ने किसानों को अमूल (आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड) के रूप में एक विशाल बिजनेस समूह बनाने में मदद की है, जिसके पास खुद के लगभग 80 उत्पाद हैं। एनडीडीबी की स्थापना डॉ. वर्गीज कुरियन ने की। उन्होंने जिन मूल्यों और नैतिकता को प्रस्थापित किया वह अन्य कॉर्पोरेट्स के लिए मिसाल बन गयी हैं। केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) के निर्देश के अनुसार उन मूल्यों और नैतिकता प्रणालियों का अध्ययन करने के लिए एमडीएल ने एनडीडीबी और आनंद में प्रशिक्षण कार्यक्रम के लगभग 12 बैचों का आयोजन किया है। यह कार्यक्रम अधिकारियों के 2 विभिन्न वर्गों के लिए तैयार किया गया है, अर्थात् प्रवेश स्तर (5 दिन) और मध्यम स्तर (3 दिन), जिस में गांव में ऑन–साइट रहना अंतर्भूत है। संगठन चलाने में मूल्यों और नैतिकता का महत्व हमारे अधिकारियों को सिखाने में यह कार्यक्रम मददगार साबित हो रहा है। इस कार्यक्रम को सभी प्रतिभागियों द्वारा अत्यधिक सराहा गया है।



वरिष्ठ प्रबंधक के लिए फॅमिली बिल्डिंग कार्यक्रम

वरिष्ठ प्रबंधक के लोग एमडीएल के व्यावसायिक निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। अक्सर यह देखा गया है कि कैरियर की सीढ़ियां चढ़ने की रफ्तार में ये सदस्य आपसी सामंजस्य खो देते है और हर विभाग में, विषय में कंपार्टमेंटलाइज़ेशन होता है। यह असंगति अब व्यावसायिक संचार के साथ–साथ सामूहिक निर्णय लेने में कुछ प्रकार की बाधाएँ पैदा कर रही है। इस तरह की बाधाओं को दूर करने के लिए वरिष्ठ स्तर के प्रबंधन के अधिकारियों के लिए टीम बिल्डिंग गतिविधियों को नियमित आधार पर करना हमेंशा विवेकपूर्ण होता है। इसलिए अपर महाप्रबंधक और उससे ऊपर की ग्रेड के अधिकारियों के लिए लैगूना रिज़ॉर्ट लोनावला में दो दिवसीय टीम बिल्डिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें एक बाहरी वक्ता के माध्यम से विभिन्न टीम निर्माण और स्वयं निर्माण गतिविधियाँ आयोजित की गई। जिस में सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने पूरे मन से भाग लिया और संगठन और वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए उक्त कार्यक्रम अच्छा साबित हुआ।

सुनहरा पौधा



घोशिता एकनाथ शेलार
वित्त (कॉस्ट ट्रेनी)

तेनालीराम हर बार अपने दिमाग का इस्तेमाल करके ऐसा कुछ करते थे कि विजय नगर के महाराज कृष्णदेव दंग रह जाते थे। इस बार उन्होंने एक तरकीब से राजा को अपने फैसले पर दोबारा विचार करने को मजबूर कर दिया।

हुआ यूं कि एक बार राजा कृष्णदेव किसी काम के चलते कश्मीर चले गए। वहां उन्हें एक सुनहरे रंग का खिलने वाला फूल दिखा। वो फूल महाराज को इतना पसंद आया कि वो अपने राज्य विजयनगर लौटते समय उसका एक पौधा अपने साथ लेकर आ गए।

महल पहुंचते ही उन्होंने माली को बुलाया। माली के आते ही महाराज ने उससे कहा, "देखो! इस पौधे को हमारे बगीचे में ऐसी जगह लगाना कि मैं इसे अपने कमरे से रोज देख सकूं। इसमें सुनहरे रंग के फूल खिलेंगे, जो मुझे काफी पसंद हैं। इस पौधे का काफी ख्याल रखना। अगर इसे कुछ भी हुआ, तो तुम्हें प्राण दंड भी मिल सकता है। माली ने सिर हिला ते हुए राजा से पौधा लिया और उनके कमरे से दिखने वाली जगह में उसे लगा दिया। दिन रात माली उस फूल का खूब ख्याल रखता था। दिन जैसे ही बीतते गए उसमें सुनहरे फूल खिलने लगे। रोज राजा उठते ही सबसे पहले उसे देखते और फिर दरबार जाते थे। अगर किसी दिन राजा को महल से बाहर जाना पड़ता था, तो उस फूल को न देख



पाने के कारण उनका मन दुखी हो जाता था। एक दिन जब राजा सुबह उस फूल को देखने के लिए अपनी खिड़की पर आए, तो उन्हें वो फूल दिखा ही नहीं। तभी उन्होंने माली को बुलवाया। महाराज ने माली से पूछा, ''वो पौधा कहा गया। मुझे उसके फूल क्यों दिख नहीं रहे हैं।''

जवाब में माली ने कहा, ''साहब! उसे कल शाम को मेरी बकरी खा गई।'' इस बात को सुनते ही उनका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। उन्होंने सीधे राजमाली को दो दिन बाद मौत की सजा सुनाने का आदेश दे दिया। तभी वहां सैनिक आए और उसे जेल में डाल दिया। माली की पत्नी को जैसे ही इस बारे में पता चला, वो दरबार में राजा से फरियाद करने पहुंची। गुस्से में महाराज ने उसकी एक बात न सुनी। रोते-रोते वो दरबार से जाने लगी। तभी एक व्यक्ति ने उसे तेनालीराम से मिलने की सलाह दी। रोते हुए माली की पत्नी ने तेनालीराम को अपने पति को मिली मौत की सजा और उस सुनहरे फूल के बारे में बताया। उसकी सारी बात सुनकर तेनालीराम ने उसे समझा-बुझाकर घर भेज दिया। अगले दिन गुस्से में माली की पत्नी उस सुनहरा फूल खानेवाली बकरी को चौराहे में ले जाकर डंडे से पीटने लगती है। ऐसा करते-करते बकरी अधमरी हो गई। विजयनगर राज्य में पशुओं के साथ इस तरह का व्यवहार करना मना था। इसे क्रूरता माना जाता था, इसलिए कुछ लोगों ने माली की पत्नी की इस हरकत की शिकायत नगर कोतवाल को कर दी।

सारा मामला जानने के बाद नगर कोतवाल के सिपाहियों को पता चला कि यह सब माली को मिले दंड की वजह से वो गुस्से में कर रही है। यह जानते ही सिपाही इस मामले को दरबार में लेकर गए। महाराज कृष्णराज ने पूछा कि तुम एक जानवर के साथ इतना बुरा व्यवहार कैसे कर सकती हो ?

'ऐसी बकरी जिसके कारण मेरा पूरा घर उजड़ने वाला है। मैं विधवा होने वाली हूं और मेरे बच्चे अनाथ होने वाले हैं, उस बकरी के साथ कैसा व्यवहार करूं महाराज' माली की पत्नी ने जवाब दिया। अब महाराज को यह बात समझ आई कि गलती माली की नहीं, बल्कि बकरी की थी। यह समझते ही उन्होंने माली की पत्नी से पूछा कि तुम्हारे पास इतनी बुद्धि कैसे आई कि इस तरह से मेरी गलती के बारे में समझा सको। उसने कहा कि महाराज, मुझे रोने के अलावा कुछ भी नहीं सूझ रहा था। यह सब मुझे पंडित तेनालीरामजी ने समझाया है।

एक बार फिर राजा कृष्णराय को तेनालीराम पर गर्व महसूस हुआ और उन्होंने कहा कि तेनालीराम तुमने मुझे एक बार फिर बड़ी गलती करने से रोक दिया। यह कहते ही महाराज ने माली का मृत्यु दंड का फैसला वापस लेते हुए उसे जेल से रिहा करने का आदेश दिया। साथ ही तेनालीराम को उनकी बुद्धि के लिए पचास हजार स्वर्ण मुद्राएं उपहार के रूप में दीं।

कहानी से सीख : समय से पहले कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। कोशिश करने से बड़ी-से-बड़ी मुसीबत से निपटा जा सकता है।



कार्तिक सकिनाला
उप प्रबंधक (पाइप शॉप–पू.खं)



मेरा हिंदुस्तान है



सूर्य का करते ध्यान हैं,
जल में गंगा का स्नान हैं।
कण कण में भगवान है,
संस्कृति ये महान है।
जहाँ धरती को माँ का स्थान है,
वो मेरा हिंदुस्तान है ।।1।।



खेतो में किसान हैं,
इसलिए घरों में पकवान हैं।
सरहदों पे जवान हैं,
सुरक्षित हमारी जान है।
जहाँ, जय जवान जय किसान है,
वो मेरा हिंदुस्तान है ।।2।।



भगवा शौर्य और बलिदान हैं,
नीला समाज का उत्थान है।
हरेक का ईमान ऐसा,
प्रकृति की ये जान है।
जहाँ सर्व धर्म समान है,
वो मेरा हिंदुस्तान है ।।3।।



हर रोग का निदान है,
प्राचीन चिकित्सा का विज्ञान है।
गुरु सुश्रुत का ये ज्ञान है,
आयुर्वेद में प्रमाण है।
जहाँ योग का विश्वस्तरीय योगदान है,
वो मेरा हिंदुस्तान है ।।4।।



बड़ो का मान हैं,
छोटे निष्ठावान हैं।
अपनों का अभिमान है,
परायों का सम्मान है।
जहाँ अतिथि भगवान है,
वो मेरा हिंदुस्तान है ।।5।।



विदेशियों को गुमान हैं,
टूटेंगे भारत के सारे अरमान है।
पर ये नये भारत का ऐलान है,
आत्मनिर्भरता का अभियान है।
जहाँ मेक इन इंडिया की शान है,
वो मेरा हिंदुस्तान है ।।6।।



आज़ादी का ये जो वरदान है,
शहीदो का एहसान है।
अब हर घर तिरंगा लहरेगा,
यही सच्चे हिंदुस्तानी की पहचान है।
जहाँ आज़ादी के अमृत महोत्सव की
पूरे विश्व में गुणगान है,
वो मेंरा हिंदुस्तान है,
वो मेंरा हिंदुस्तान है ।।7।।
जय हिंद !!



मधुमक्खी (आपबीती)



अक्षय संजय देखणे
पीए कम क्लर्क

उस वक्त मेरी उमर लगभग 8 साल की थी, स्कूल की अंतिम परिक्षा खत्म होकर गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू होनेवाली थी और छुट्टियाँ खत्म होते ही सबकी तरह मेरा मन गाँव में दादा–दादी के पास जाने को उछल रहा था। वैसे तो मैं और मेरा पूरा परिवार हर साल गर्मियों की छुट्टियों में गाँव जाते थे। लगभग 15 दिन हम सब गाँव में एक साथ रहते थे। मेरे चाचा–चाची और उनके बच्चे वो भी सब गाँव आते थे और सब एक साथ हँसी मजाक करके गाँव में रहते थे। खेत में जाना, आम, अमरुद पेड़ पर चढ़कर तोड़कर खाना, नदी में नहाने जाना, गन्ने का ज्यूस पीना, बैलगाड़ी पर सैर करना, दादाजी के साथ खेत में जाना, दादी की हाथ के बने गरमा गर्म पकोड़े काली चाय के साथ खाना, इन सब बातों से मन को जो खुशी मिलती थी उसको शब्दों में बयान नहीं कर सकते थे।

अप्रैल का महिना आया और मेरी अंतिम परिक्षा भी खत्म हुई। पापा ने गाँव जाने की टिकट भी बुक करवा ली। हम सब बहुत खुश थे। गाँव जाने के लिए सारी तैयारियाँ कर रहे थे। गाँव में जाने के बाद क्या क्या करना हैं, कहाँ–कहाँ घुमने जाना है, क्या–क्या खेल खेलना है इन सबकी योजनाएं हम सब भाई बहन कर रहे थे। आखिरकार गाँव जाने का दिन आ गया। सुबह जल्दी उठकर तैयारी करके हम सब ट्रेन पकड़ने के लिए स्टेशन पहुँचे। हर बार की तरह इस बार भी ट्रेन में खिड़की की तरफ बैठने के लिए में और मरे छोटे भाईयों में लड़ाई शुरू हुई। फिर हमेशा की तरह माँ ने सुलह कर दी और थोड़ी–थोड़ी देर सबको खिड़की की तरफ जो सीट थी उस पर बैठने का मौका दिया। ट्रेन की सीटी की आवाज, पहाड़ो पर हरियाली का नजारा, स्टेशन आने पर चाय, वड़ा–पाव बेचने आने वालों का शोर यह सब हम छोटे बच्चों को बहुत अच्छा लगता था। सफर का मजा लेके हम सब शाम को 5 बजे गाँव पहुँच गए। जाते ही दादी और दादा ने हम सब का बहुत लाड किया, अपने हाथों से भर पेट खाना खिलाया और फिर लोरी सुनाके हमे अपनी गोद में सुलाया। ऐसे ही मज़े से दिन जा रहे थे, तब अचानक एक दिन हमारे माता–पिता और चाचा–चाची ने कहीं बाहर पहाड़ो पर घुमने जाने की योजना की। हमारे गाँव में ही भैरव टेकड़ी है, वही पर हम सबको घुमने का तय किया। हम सब भाई बहन बहुत खुश थे, क्योंकि आज तक हमने कभी भी कोई पर्वत या टेकड़ी पर ट्रेकिंग नहीं की थी। कल पहाड़ पर जाना है इस खुशी में तो मैं

मेरा छोटा भाई और मेरा चचेरा भाई रात भर जागते रह गए।

सुबह हो गई, गर्मियों के दिन थे इसलिए दादाजी ने कहा कि सुबह जल्दी उठकर चढ़ाई करना शुरू करो क्योंकि जैसे-जैसे दिन आगे जाएगा सूरज की गर्मी बढ़ेगी और फिर चढ़ना मुश्किल होगा। इसलिए सब जल्दी से तैयार हो गए थे। दादीने तो सफर में खाने के लिए थेपला, पराठा, चटणी और कोकम का शरबत सब चीजे दे दी थी। सब तैयारी होकर सुबह 7 बजे सब सफर की ओर निकल पड़े। वैसे भैरव टेकड़ी हमारे घर के आंगन से दिखाई देती थी पर फिर भी हम में से कोई उसके ऊपर नहीं गया। इसलिए सभी लोग और भी खुश थे।

8 बजे हमने टेकड़ी की चढ़ाई शुरू की। हंसते-खेलते दौड़ लगाते सब घरवालें चल रहे थे। रास्ते में हमें रंग-बिरंगी फूल और बेर के पेड़ दिखाई दिए। लाल मिट्टी और हरियाली मन को एक प्रसन्नता दे रही थी। अलग-अलग तरह के पंछी दिखाई दे रहे थे। वैसे टेकड़ी बहुत उँची थी इसलिए हमें 2 से 3 घंटे लगे ऊपर तक जाने के लिए। मेरी माँ, चाची, बुआ चल के थोड़ा थक गए थे और सबको भूख भी बहुत लगी थी। लगभग 11 बजे थे और टेकड़ी का अंतिम चरण और भैरव मंदिर बस 10 मिनट की दूरी पर था। मंदिर आने के पहले एक तालाब दिखाई दिया, जैसे मानो पर्वत का पानी पत्थर से काटकर उस तालाब में जमा हुआ हो। ऐसे वहाँ पर 3 छोटे-छोटे तालाब थे। सभी ने सोचा के यहाँ हाथ-पाँव धोकर फिर ऊपर मंदिर दर्शन के लिए जाते हैं।

पहले दो तालाब का पानी साफ और ठंडा था और आखरी तालाब में बहुत सी घास और पेड़ के पत्ते गिरे हुए थे। एक-एक करके सभी हाथ-पाँव धोकर ऊपर मंदिर की ओर चलने लगे, सबसे आगे मेरा चचेरा भाई था और उसके पीछे हम। माँ, पापा और चाचा, चाची पीछे आ रहे थे। मैं मेरे भाई के साथ पीछे जा ही रहा था तभी अचानक मेरे कान में मक्खी घुमने जैसे आवाज आ गई। पहले तो मुझे लगा साधारण सी मक्खी होगी इसलिए मैंने ज्यादा ध्यान नहीं दिया और आगे चलता गया। लेकिन थोड़ी ही देर में मक्खियों का पूरा झुंड मेरी तरफ आ गया और वह कोई मामूली मक्खी नहीं थी बल्कि डंक मारने वाली मधुमक्खी थीं। मैं तो दौड़ते हुए आगे निकल गया लेकिन वह मेरा पीछा कर रही थी। मेरा चचेरा भाई जो सबसे आगे हल रहा था वो तो सबसे आगे दौड़कर मंदिर में छूप गया। मैं भी आगे भागकर चला गया। पीछे से मेरी माँ, पापा और चाचा, चाची आ रहे थे। तो उन मक्खियों ने उनको घेर लिया। मेरी माँ तो पहाड़ से गिरते-गिरते बच गई। पर मक्खियाँ तो उनका पीछा ही नहीं छोड़ रही थी। एक-एक करके सबको काट रही थी और डंक मार रही थी। क्या करे किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। तभी मेरे पापा ने तय किया की सभी लोग तालाब में उतर जाओ क्योंकि मक्खियाँ पानी के अंदर नहीं आ सकती। मेरी माँ, चाचा-चाची और पापा चारो उस ठंडे पानी के तालाब में उतर गए और सिर्फ मुह बाहर रखकर अंदर ही तालाब के किनारे बैठ गए।

कुछ देर के बाद वह मधुमक्खियाँ उनका पीछा छोड़ के चली गई। ऊपर मंदिर से मैं और मेरा चचेरा भाई नीचे आ गए और देखा तो हमारे माता–पिता उस ठंडे तालाब में थर–थर कांप रहें थे। मधुमक्खियाँ लगभग चली गई थी। तभी माँ, पापा, चाचा, चाची तालाब से बाहर आने लगे। पापा के तो पूरे शरीर में उस मधुमक्खी ने काटा था। कहते हैं जब ये मधुमक्खियाँ काटती है तो अपने मुँह से एक काँटा हमारे शरीर में छोड़ जाती है। ऐसे बहुत से काँटे मैंने पापा के पीठ से निकाले। डर के मारे सब कांप रहे थे। भूख के मारे पेट में चूहे दौड़ रहे थे। सब लोगों ने पास में ही पेड के नीचे बैठकर खाना खाया और फिर से घर की ओर चलने लगे।

अब सबसे मुश्किल सवाल यह था कि मधुमक्खियाँ वहाँ आ गई तो कैसे? हर कोई अपनी अपनी सुझ–बुझ से विचार करने लगा लेकिन फिर भी कोई जवाब नहीं मिल रहा था। क्योंकि ऐसा कहा जाता है की आम तौर पर मधुमक्खियाँ तब तक हमें नहीं काटती जब तक उन्हें कोई परेशान न करें। हम सब तो तालाब के पास पानी पी रहे थे फिर मधुमक्खियाँ हमारे पास आई कैसे यह सवाल सबके दिमाग में चल रहा था। लेकिन एक शख्स था जो बहुत शांत बैठा था और वो था मेरा चचेरा भाई। वह कुछ नहीं बोल रहा था। हम जानते थे कि वह थोड़ा शैतानी करता था। फिर मेरे पापा ने थोड़ा डाँटकर उसको पूछा कि अमित तू चुप क्यों है? तुम्हें कुछ पता है यह कैसे हुआ? सच बोल वरना बहुत पिटाई होगी। ऐसी फटकार देने के बाद उसने हकीकत बताई। उसने कहा कि तालाब का ठंडा पानी पीकर वो भैरव मंदिर की ओर जा रहा था तो उसकी नजर उस तीसरे तालाब में गई जहाँ पर मधुमक्खियाँ पानी पीने के लिए तालाब के किनारे जो घास उग आई थी वहाँ पर बैठी थी और उसने उन मधुमक्खियों पर पत्थर फेंक के मारा तो वह सारी मधुमक्खियाँ उठ कर हमारे पीछे पड़ गई और काटने लगी। यह सुनकर सब घर वालें गुस्से से लाल हो गए और मेरे चचरे भाई अमित को डाँटने लगे। उसे भी अपनी गलती का पछतावा हो गया और सबसे माफ़ी मागने लगा। खैर, सबने उसे माफ कर दिया पर सबसे मजे की बात तो यह रही की जिसकी वजह से ये सब कांड हुआ उस मेरे भाई को एक भी मधुमक्खी ने काटा नहीं। क्योंकि उस जनाब के पास एक टोपी थी और जिसको वह अपने सिर पर बार बार घुमा रहा था ताकि मक्खियाँ उसके पास आकर रुके ही नहीं इसलिए उसे एक भी मधुमक्खी का डंक नहीं लगा। यह सुनकर तो हम सब घरवाले और भी गुस्सा हो गए की करे कोई और भरे कोई और। यह बात याद आकर सब हंसने लगे और फिर से घर की ओर चल पड़े।

दो दोस्त





भक्ती तुकाराम हरदास
पीए कम क्लर्क (वित्त)

एक बार दो दोस्त एक बड़ा रेगिस्तान पार कर रहे थे। रास्ते में चलते–चलते उनका किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया और एक दोस्त ने गुस्से में आकर दूसरे दोस्त को थप्पड़ मार दिया। दूसरे दोस्त के यह बात दिल पर लग गई और उसने रेत पर एक लकड़ी से लिखा – 'आज मेरा और मेरे दोस्त का एक छोटी सी बात से झगड़ा हो गया, तो मेरे दोस्त ने मुझे थप्पड़ मार दिया।' लेकिन रेगिस्तान होने कारण दोनों एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते थे। तो दोनों ने यह तय किया कि बिना बात किये, जब वह मंजिल तक पहुँच जायेंगे तो झगड़ा सुलझा दिया जायेगा। आगे चलने पर एक झील आई तो दोनों ने तरोताजा होने के लिए नहाने का विचार किया। झील के दूसरे किनारे पर बहुत ज्यादा दलदल था। वह दोस्त जिसे चांटा मारा गया था। तैरते–तैरते उस दलदल में फंस गया और डूबने लगा। बाहर खड़े दोस्त ने ये सब देखा तो वह अपने दोस्त को बचाने के लिए वहा गया और बहुत मेहनत के बाद उसे बचाकर बाहर निकाल लिया। जिस दोस्त को बचाया गया था, उसने झील के किनारे एक बड़े पत्थर पर लिखा कि, 'आज मुझे मेरे दोस्त ने मुझे डूबने से बचाया।' दूसरे दोस्त ने ये सब देखकर पूछा कि जब मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा तो तुमने रेत पर लिखा और जान बचाई तो तुमने पत्थर पर लिखा। तुमने ऐसा क्यों किया? तो दोस्त ने जवाब दिया 'जब हमे उसे रेत पर लिखना चाहिए। क्योंकि जहां वक्त और माफ़ी की हवाएं उसे मिटा दे। लेकिन जब हमारे साथ कोई अच्छा व्यवहार करे तो उसे पत्थर पर लिखना चाहिए। जिसे कोई नहीं मिटा सकता।'

इस कहानी से यह सीख मिलती है कि जीवन में कभी भी बुरी घटनाओं को दिल पर नहीं लगाना चाहिए।





योगेश बी पंडित
प्लानर एस्टीमेटर (जनि–हल योजना)

सफर हिंदी भाषा का

हिंदी एक प्रसिद्ध भाषा है, जिसकी लिपि देवनागरी है। हिंदी हिंदुस्तान की पहचान है। वैसे भारत में असंख्य भाषाएँ बोली जाती है। परंतु हिंदी इन सब में विशिष्ट है। इस भाषा के माध्यम से पूरा भारत, आपस में जुड़ा हुआ है। हिंदी का जन्म ऐसे ही नहीं हुआ, यह विकास के विभिन्न चरणों से गुजरती हुई, इस शिखर पर आसीन हुई है।

भारत में जब मुगलों का शासन आरंभ हुआ, तब उन्होंने राजकाज की भाषा का सन्मान उर्दू–फारसी को दिया। इस के पश्चात अंग्रेजों का शासन काल आरंभ हुआ। उन्हें उर्दू–फारसी ने राजकाज संभालने में असुविधा हुई। अंत: उन्होंने राजकाज की भाषा अंग्रेजी को बना दिया। ऐसा इसलिए भी किया गया कि हर शासन अपनी बात को प्रजा तक थोंपना चाहते थे। इस तरह प्रजा में सरलतापूर्वक हिनता उत्पन्न की जा सकती थी। देश विभिन्न जातियों और धर्मों से बंधा हुआ था। स्वतंत्रता सेनानियों को ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस हुई जो उन्हें एकता के सूत्र में पीरों सकें और जन–जन की भाषा बन जाए। हिंदी भाषा में उन्हें ये सभी गुण नजर आए। फिर क्या यह हिंदी जन–जन की भाषा बन गई। स्वतंत्रता की लड़ाई में इस की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

एक लंबे अंतराल के पश्चात भारत ने गुलामी की बेडियों को तोड़ते हुए स्वंय का स्वतंत्र आस्तित्व ढूंढा और आजाद देश बन गया। आजाद भारत ने नए सिरे से अपना विकास आरंभ किया। देश को एक नई रूप रेखा की आवश्यकता थी। अभी तक तो वह दूसरों के नियम–कानूनों को निभा रहा था। अत: सर्वप्रथम देश को एकत्र कर उसका संविधान निर्माण किया गया। तभी से हिंदी के विकास का क्रम आरंभ हुआ। संविधान में हिंदी को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है।

ऊर्जा संरक्षण



श्रीशैल नंदकुमार रायचुरे
योजनाकार अवं अनुमानकर्ता (पूर्व खंड)

हम सभी को अपने जीवन में कभी न कभी पंखे और लाइट बंद किए बिना अपने कमरे से बाहर निकलने के लिए डांट पड़ती होगी। उस समय हमारे साथ ऐसा हुआ होगा कि हमारे माता–पिता हम पर चिल्लाते हैं क्योंकि उन्हें बिजली का भारी बिल देना पड़ता है। हालांकि, हमेशा ऐसा नहीं होता है। यह अनावश्यक रूप से ऊर्जा बर्बाद न करने के बारे में भी है। यदि कमरे में कोई भी न भी हो तो भी लाईट और पंखा चालू रखा जाता है, इसका अर्थ है कि बिना किसी प्रयोजन के संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है। यह उर्जा की बर्बादी बन जाता है जिससे हमें हर कीमत पर बचना चाहिए।

ऊर्जा के संरक्षण के लिए जो महत्वपूर्ण है वह है मानवीय आदतें और अभ्यास। अधिकांश लोग इसे भविष्य के लिए ऊर्जा बचाने के लिए आवश्यक या महत्वपूर्ण नहीं समझते हैं। उनके साथ ऐसा नहीं होता है कि उनके बच्चों के बड़े होने पर ऊर्जा का लापरवाह खर्च विनाशकारी हो सकता है। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे ऊर्जा का संरक्षण हो सकता है।

सामान्य के अलावा, वैकल्पिक दिनों में ग्रीष्मकाल के दौरान एयर कंडीशनर का उपयोग किया जा सकता है। जिनके पास अपनी कार है, वे लाल बत्ती पर काफी देर तक रुकने पर इंजन बंद कर सकते हैं। कोई भी अपने घर में गीजर का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग कर सकता है। इससे न सिर्फ ऊर्जा की बचत होगी, बल्कि पानी की भी बचत होगी। गीजर बहुत अधिक वर्तमान बिजली का उपयोग करते हैं क्योंकि वे बहुत उच्च वोल्टेज पर चलते हैं। गीजर को सही समय पर बंद करके दिन में केवल एक बार इसका इस्तेमाल करने से पानी और बिजली दोनों की बचत हो सकती है। जब कार्यालयों की बात आती है तो ऊर्जा को विभिन्न तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है। इसमें उपयोग में नहीं होने पर कंप्यूटर को बंद करना, इंटरनेट सुविधाओं का उपयोग न करना जब उनकी आवश्यकता न हो और अनावश्यक प्रकाश व्यवस्था को बंद करना शामिल है।

स्कूलों और कॉलेजों में अक्सर यह देखा जाता है कि छात्र उपयोग में नहीं होने पर या दिन के अंत में पंखे और लाइट बंद करना भूल जाते हैं। जो हाउसकीपिंग संचालन का प्रभारी होता है, वह आमतौर पर अपनी शिफ्ट के दौरान ऐसा करता है। यह अतिरिक्त ऊर्जा के बड़े पैमाने पर उपयोग का कारण बनता है। ऊर्जा का संरक्षण प्राकृतिक नहीं है और इसमें बहुत समय लगता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बचाई गई सारी ऊर्जा एक साथ जोड़ने पर ज्यादा नहीं होती है। हालांकि, विचार की दिशा में उठाया गया हर छोटा कदम हमें प्रदूषण मुक्त

शब्द के एक इंच करीब लाता है।

ऊर्जा का संरक्षण प्रदूषण को कम करता है क्योंकि यह उपयोग में आने वाले संसाधनों की संख्या को कम करता है। यह हवा में कम विषाक्त पदार्थों को छोड़ने का कारण बनता है। हालांकि, अंत में, यह भी माना जाना चाहिए कि ऊर्जा का संरक्षण मानव व्यवहार के बारे में है। यदि मनुष्य तर्कहीन व्यवहार करना चुनता है और अपने भविष्य को भूल जाता है, तो न तो संरक्षण संभव है और न ही आने वाली पीढ़ियों के लिए भविष्य सुरक्षित है।

ऊर्जा का संरक्षण ज्यादातर जागरूकता पैदा करने से संबंधित है। ग्लोबल वार्मिंग और ओजोन परत की कमी के कारण अधिकांश लोगों को पृथ्वी की स्थिति के बारे में पता नहीं है। हालाँकि, थोड़ी मात्रा में जागरूकता के साथ, व्यक्तियों की आदत में बदलाव लाया जा सकता है। उनके पैटर्न में बदलाव से दुनिया में फर्क आ सकता है। ऊर्जा संरक्षण का संबंध केवल व्यवहार से ही नहीं बल्कि समय से भी है।

लोग यह सोचने में समय नहीं लगाते कि अगर बिजली पैदा करने के लिए कोई संसाधन नहीं बचे तो क्या हो सकता है। रेड लाइट पर कार के इंजन को बंद करना कितना आवश्यक है, इसकी बिल्कुल भी थाह नहीं ली जा सकती। कार को बंद करने से न केवल ऊर्जा की बचत होती है, बल्कि इससे पर्यावरण में प्रदूषण भी कम होता है। ऊर्जा संरक्षण के नियम से हम न तो पर्यावरण में ताजी ऊर्जा जोड़ सकते हैं और न ही ऊर्जा समाप्त हो सकती है। इसलिए हमें इसे भविष्य के लिए संरक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

ऊर्जा संरक्षण पर कुछ ध्यान रखने योग्य बातें :

- ऊर्जा का न तो निर्माण किया जा सकता है और न ही विनाश।
- ऊर्जा स्वयं को रूपांतरित कर सकती है।
- अधिकांश लोग भविष्य के लिए ऊर्जा बचाने को आवश्यक नहीं समझते हैं।
- ऊर्जा के संरक्षण के बिना भविष्य में जीवित रहने का कोई रास्ता नहीं है।
- ऊर्जा का संरक्षण प्राकृतिक नहीं है और इसमें बहुत समय लगता है।
- ऊर्जा का संरक्षण प्रदूषण को कम करता है क्योंकि यह उपयोग में आने वाले संसाधनों की संख्या को कम करता है।
- ऊर्जा संरक्षण का संबंध केवल व्यवहार से ही नहीं बल्कि समय से भी है।
- जिनके पास अपनी कार है, वे रेड लाइट पर काफी देर तक रुकने पर इंजन बंद कर सकते हैं।
- उनकी आदत में बदलाव से दुनिया में बदलाव आ सकता है।
- ऊर्जा का संरक्षण जागरूकता से संबंधित है।

आसान बातो में कहा जाये तो,

"ऊर्जा है तो कल है"

श्री छत्रपती शिवाजी महाराज का रायगढ़ का किला को 3 साल की राधा ने नंगे पाँव चढ़ा।



पंकज सिंह
उप महाप्रबंधक (जनि – टेक्निकल)

पेंट शॉप में कार्यरत श्री नीलेश बुरुणकर की तीन साल की पुत्री ने रायगढ़ के किले को मात्र ढाई घंटों में चढ़ कर पूरे जिले में खलबली मचा दी और अपने माँ बाप का नाम रोशन किया।

राधा के पिता नीलेश बुरुणकर ने ढाई साल की उम्र से ही राधा को श्री छत्रपती शिवाजी महाराज के प्रति प्रेम और आदर निर्माण करना आरंभ कर दिया था जिसके कारण उसने अपने माता–पिता के सामने किला रायगढ़ चलने के लिए दीवाली की छुट्टी में आग्रह किया। दीवाली मनाने के लिए गाँव में आई हुई राधा प्रेक्षणीय स्थल या फिर समुंदर घूमने न जाने की जगह श्री छत्रपती शिवाजी महाराज के चरणों में नतमस्तक होने का प्रस्ताव जब अपने माता–पिता के सामने रखा तो वह भी आश्चर्यचकित हो गये और उसे मना नहीं कर पाये।

दिनांक 25 अक्टूबर 2022 को सुबह की ठंड और ऊपर से नंगे पाँव की कठिनाइयों का सामना करते हुए नन्हीं राधा, अपनी बड़ी बहन सई और भाई अर्णव एवं माता–पिता के साथ सुबह 08:30 बजे किले के लिए प्रस्थान किया। ढाई घंटे में 2,700 फिट ऊँचाई पर स्थित श्री छत्रपती शिवाजी महाराज के किले पर उसने अपने पूरे मन, लगन और परिश्रम से पवित्र भूमि पर पहुँच कर किले का दर्शन किया और महाराष्ट्र के स्वराज्य का झंडा लहराया।

म्हसला तालुका में आंबेत की रहेने वाली तीन साल की राधा का सुबह–सुबह की ठंड और नंगे पाँव किले पर चढ़ने का सफल प्रयास से श्री छत्रपती शिवाजी महाराज के प्रति प्रेम करने वाले सभी लोगों को एक नयी प्रेरणा मिली है। उसका यह कार्य सच में समाज के प्रति एक प्रेरणा देने वाला है।



राष्ट्रकवि - मैथिलीशरण गुप्त



मोहिनी महेंद्र सावंत
प्लानर एस्टीमेटर

मैथिलीशरण गुप्त जन्म 3 अगस्त 1886 को चिरगांव (झाँसी उत्तरप्रदेश) के एक वैश्य परिवार में हुआ था। गुप्तजी की आरंभिक शिक्षा झाँसी के राजकीय विद्यालय में हुई। परंतु उनका मन विद्यालय से अधिक घर में रमता था। अत: झाँसी से लोटने पर स्वतंत्र रूप से संस्कृत, हिंदी तथा बंगला साहित्य का अध्ययन किया। धीरे–धीरे कथा साहित्य तथा उपन्यास आदि में रुची बढ़ने लगी। इतिहास, पुराण आदि के साथ संस्कृत के काव्य और नाटकों का भी उन्होंने अध्ययन किया। कालिदास गुप्तजी के अत्यंत प्रिय कवि थे। अंग्रेजी सीखने का प्रयत्न भी किया परंतु उसमें विशेष गति नहीं रही।

कवि की स्वर्ण जयंती के अवसर पर महात्मा गांधी ने उन्हें 'मैथिली काव्य मान' ग्रंथ भेट करते हुए 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से सन्मानित किया। सन 1936 में सांकेत के लिए हिंदुस्थानी अकेडमी पुरस्कार और सन 1938 में मंगलाचरण पारितोषिक प्राप्त हुआ। सन 1946 में आगरा विश्वविद्यालय और सन 1960 में काशी विश्वविद्यालय ने डी लिट की उपाधि देकर उन्हें सम्मानित किया।

द्विवेदी युग के शीर्षस्य कवि मैथिलीशरण गुप्त है। उन्होंने महावीर प्रसाद जी के आशीर्वाद से काव्य क्षेत्र में प्रवेश किया और उनके प्रोत्साहन से कविता लिखी। धीरे–धीरे मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युगीन काव्य की मर्यादाओं से ऊपर उठत द्विवेदी युग और उसके बाद आनेवाले छायावादी युग के बीच की कड़ी बन गए। प्रथम कविता 'हेमंत' सन 1905 में प्रकाशित हुई। 60 वर्ष के लंबे कवि कर्म में 40 मौलिक, 6 अनुदित ग्रंथ रचे, कुछ फुटकर कविताएँ भी लिखी। 1909 में प्रकाशित लघु प्रबंध 'रंग में भंग' राजपूती आन को लेकर लिखी गयी रचना है। फिर महाभारत पर आधारित उनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई। उनकी कृति जयद्रथ वध सन 1910 में प्रकाशित हुआ।

मैथिलीशरण गुप्त की काव्य रचनाओं की संख्या 34 के आसपास है। गुप्तजी सतत रूप से 50 वर्षों तक कार्य लेखन करते रहे। मूल काव्य रचनाओं के अलावा गुप्तजी ने उर्दू, संस्कृत और बंगला के ग्रंथो का हिंदी में अनुवाद किया किया है। उनकी संख्या लगभग 9 हैं।

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिंदी काव्य जगत में

राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के प्रतिनिधि कवि है। उनका संपूर्ण काव्य उस युग के राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना विकास के प्रत्येक चरण से प्रभाव ग्रहण करता गया और हिंदी नवजागरण को अपना योगदान देता रहा। जन–मानस में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए और वर्तमान दुर्दशा के कारणों को जानने के लिए मैथिलीशरण गुप्त ने अतीत के वैभवशाली भारत का चित्र अपनी कविताओं द्वारा प्रस्तुत किया। हम कौन थे? हम क्या थे? और क्या होंगे? यह जानने की जिज्ञासा लोगों में उत्पन्न हो और जिससे भारतीय सांस्कृतिक गरिमा और सभ्यता को वे जान सकें और गुलामी की श्रृंखलाओं को तोड़कर एक स्वतंत्र भारत के निर्माण में अपना योगदान दे सके।

गुप्तजी ने वर्तमान युग की दैन्य दशा को सुधार और स्वाधीनता की आकांक्षा व्यक्त की है। तत्कालीन युग की परिस्थिति के प्रति किसी भी प्रकार से हीन भावना मन में नहीं रहे, बल्कि देश के गौरव को बढ़ाने के लिए कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर कार्य करें इस भावना की अभिव्यक्ति गुप्तजी की 'द्वापर' रचना में उस प्रकार हुई है–

'अपने युग को हीन समझना आत्महीनता होगी, सजग रहो, इससे दुर्बलता और दीनता होगी। जिस युग में हम हुए वही तो अपने लिए बड़ा है, अहा ! हमारे आगे कितना कर्मक्षेत्र पड़ा है।'

गुप्तजी ने नारी को उदात्त दैवी जैसा रूप देकर शक्ति और पतिव्रता, सात्विकता के रूप में प्रतिष्ठित किया है। परंतु केवल पूज्य भाव जगाने की वह घडी नहीं थी बल्कि नारी को सहयोगिनी के रूप में दिखाने का प्रयास किया है। हिंदी साहित्य के काव्य क्षेत्र में भी कुछ ऐसे नारी पात्रों की उपेक्षा हो रही थी, जिनके त्याग, उदारता और वेदना की अब तक कहीं भी चर्चा नहीं हुई थी। गुप्तजी ने सांकेत में उर्मिला और यशोधरा में राहुल जननी की वेदना को स्वर देकर नारी के अस्तित्व बोध को अभिव्यक्त किया है।

गुप्तजी ने अपने काव्य में जातिभेद, वर्णभेद, जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध किया और इन बुराइयों के कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच जो दरार पड़ी थी, उस दरार को मिटने के प्रयास एवं मनुष्य ही करे इस उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु गुप्तजी ने अपने 'द्वापर', 'गुरुकुल' काव्यसंग्रहों की रचना की थी।

गुप्तजी का विश्वास था कि अनेक विसंगतियों और त्रुटियों के बावजूद विश्व का विकास होगा, क्योंकि मनुष्य ही इस विकास के केंद्र में है। गुप्तजी कुंती द्वारा यह विश्वास प्रकट करते हैं–

''होगा इस विश्व का विकास जो अब भी।
नर से होगा वह, जैसा हुआ अब भी ।।
आते हैं चढ़ाव उतार तथा आवेंगे।
तो भी हम लोग सदा बढ़ते ही जायेंगे ।।''

हमारा अनिक चेंबूर है सबसे प्यारा



तपन मंडल
प्रबंधन (अनिक चेंबूर)

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड देश का प्रमुख शिपयार्ड है। यह महाराष्ट्र के पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित है। इसका विकास का सन 1774 से आरंभ हुआ। यहाँ पर समुद्री तट के किनारे दलदली भूमि में एक सुखी गोदी का निर्माण मराठा शासन के दौरान हुआ था। प्रारंभ में यहाँ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों की मरम्मत होती थी। उस छोटी शुरुआत से माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड आज विशालकाय रूप में विकसित हुआ है और आज निरंतर बुनियादी सुविधाओं के विकास से वैश्विक स्तर पर प्रतियोगिता करने में सक्षम है।

प्रारंभ में यहाँ लकड़ी के जहाज बनाए जाते थे। सन 1817 में इस यार्ड में निर्मित त्रिकोमाली नाम की वुडेन बोट आज भी चलायमान अवस्था में इंग्लैंड के लीवर पूल में सुरक्षित है। इसका निर्माण वाडिया परिवार द्वारा किया गया था जो उस समय इस यार्ड के मुख्य प्रबंधक थे। इसके पहले पुर्तगाली शासको ने अपनी जहाजों की मरम्मत के लिए सन 1630 में सुरत में यार्ड स्थापित किया था। अंग्रेजों के शासन काल में लकड़ी की अनेक प्रकार और क्षमता की बोट का निर्माण किया था। विकास का चक्र घूमता रहा और नए प्रयोग के तहत एम एस प्लेट से जहाजों का निर्माण किया गया जो भाप से संचालित होती थी। इन जहाजों का उपयोग माल ढोने एवं यात्रियों को पहुँचाने के लिए किया जाता था। सन 1945 के बाद युद्धपोतों का निर्माण सुरक्षा की दृष्टि से





सबल देशों द्वारा आत्मरक्षा हेतु किया गया है।

हम जानते है की एमडीएल एक अपना परिचय लेकर डॉकयार्ड रोड, माझगांव में विराजमान है। इनकी दायरा के बारे में बात करेंगे तो बहुत बड़ा इतिहास निकलेगा और मुगल हाउस से अलकॉक की जोड़ने की बात सामने आयेगी। कुछ साल पहले मैं कंपनी में जॉइन हुआ था तो देखा पूर्व और पश्चिम दिशा में दो दो दरवाजा हुआ करता था अलकॉक एंट्री और मुगल हाउस (दक्षिण यार्ड) रास्ते में दरवाजा था। अब सब एक साथ मिलकर वर्तमान एमडीएल के नाम से जाना जाता है। एमडीएल के साथ जैसा न्हावा यार्ड जुड़ा है वैसे चेंबूर में स्थित अनिक चेम्बूर यार्ड भी इसकी अभिन्न अंग है।

अनिक चेम्बूर यार्ड कंपनी की उत्पादन का एक महत्वपूर्ण अंग है। जैसे कि हम जानते है कोई भी उत्पादन का कच्चा सामान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है और इसके बिना कोई भी उत्पादन संभव नहीं है। अनिक चेम्बूर वर्तमान में बीपीसीएल के सामने माहुल गांव में स्थित है और दिलीप वेनसरकर क्रिकेट अकाडमी के साथ सटा हुआ है। इसके क्षेत्रफल कुल 27 एकड़ है। निकास और प्रवेश के लिए केवल एक ही गेट है। उत्पादन के 80% सामान अनिक चेम्बूर यार्ड में रखा जाता है। साल में औसत 4 हजार करोड़ का कच्चा माल यहाँ मौजूद रहता है। इन कच्चे मालों को रखने के लिए 18 गोदाम है। यहाँ पर दो तरह के स्थान देखा जा सकता है जिसे हम ओपन और क्लोज क्षेत्र में वर्गीकृत कर सकते हैं – ओपन स्थान का कुल क्षेत्रफल 11 एकड़ है वही क्लोज क्लोज स्थान का कुल क्षेत्रफल 16 एकड़ है।

अनिक चेम्बूर यार्ड के प्रशासनिक संचालन की जिम्मेदारी उप महाप्रबंधक द्वारा की जाती है। उनके अंतर्गत 8 अधिकारी कार्यरत है। यहाँ लगभग 150 कामगार काम करते है। यहाँ एक एम्बुलेंस और एक फायर टेंडर का प्रबंध किया गया है। अनिक चेम्बूर यार्ड के प्रमुख विभागों के अंतर्गत स्टील, बॉड और केबल भंडार आते है। यहाँ सामान्य सामग्री (Common Store) का सामान और पेंट भंडार का सामान भी मौजूद है। यहाँ पर कच्चे स्टील को पेंट का ट्रीटमेंट देने के लिए एक प्लांट बनाया गया है जिसका नाम पीपीटी प्लांट है। सिक्यूरिटी और सेफ्टी विभाग का एक–एक अधिकारी भी यहाँ पर तैनात किया गया है।

दैनिक गतिविधियाँ में सामानों की प्राप्ति एवं एमडीएल यार्ड में आवश्यक सामान भेजना इसके दायरे में आता है। हम सब यहाँ एक साथ मिलकर काम करते है।

हरियाली तो मुंबई में बहुत कम देखने को मिलती है पर हमने अपने मेहनत से हमारे चेंबूर यार्ड में पेड़ लगाये हैं। इनकी शीतल छाया में, हरियाली में हर दिन के काम की थकान महसूस नहीं होती है। इसके कारण हम उत्पादन के लिए भरपूर मन से काम करते है और करते रहेंगे।

शीट मेटल (धातु पत्र)



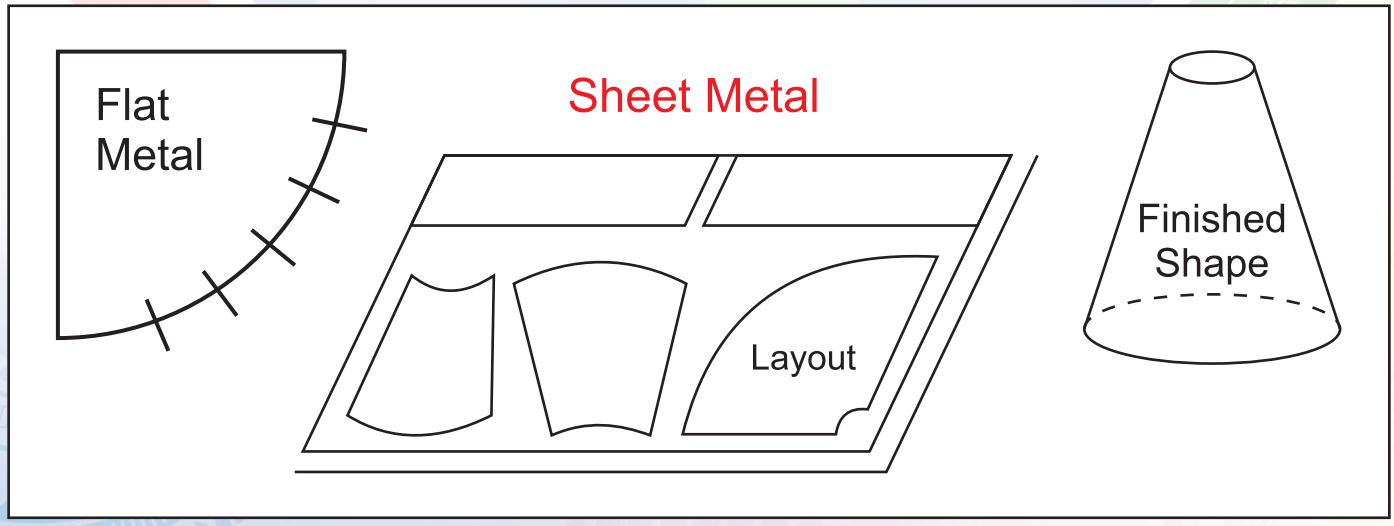
आदित्य सिंह
वेल्डर

शीट मेटल किसी विशेष धातु जैसेकि लोहा, अल्युमिनियम, कॉपर इत्यादि की एक पतली शीट के रूप में बनाया जाता है। जिसे आसानी से रोल किया जा सकता है और किसी भी रूप में डाला जा सकता है। शीट मेटल का इस्तेमाल आज हर जगह किया जा रहा है विशेष तौर पर किसी भी उपकरण की वाहन की बाहरी बॉडी बनाने के लिए इसका इस्तेमाल बहुत ज्यादा किया जाता है। शीट मेटल की मोटाई मापने के लिए वायर गेज का इस्तेमाल किया जाता है और अलग–अलग मोटाई वाली शीट मेटल का इस्तेमाल किया जाता है। शीट मेटल का इस्तेमाल किसी विशेष कार्य या विशेष वस्तु को बनाने के लिए किया जाता है।

किसी भी शीट मेटल को किसी वस्तु के रूप में बनाने से पहले उसके ऊपर लाइन द्वारा ले आउट तैयार किया जाता है ताकि जिससे पता चल सके कि जो भी वस्तु हमें बनानी है वह सही प्रकार से और सही आकार में बन सकती है या नहीं। शीट मेटल पर ले आउट बनाने के बाद में उसकी कटिंग की जाती है और उसे सही एक वस्तु का रूप दिया जाता है।

शीट मेटल में प्रयोग होनेवाली धातुएं :

जैसाकि हम सब जानते हैं शीट मेटल अलग–अलग उपकरण वस्तुओं को बनाने के लिए इस्तेमाल की जाती है। लेकिन सभी वस्तुओं में एक ही प्रकार की शीट मेटल का उपयोग नहीं किया जा सकता है क्योंकि बहुत–सी वस्तुएं ज्यादा मजबूत होनी चाहिए जैसेकि हवाई जहाज के पुर्जे किसी भी वाहन के बाहरी पुर्जे जो की ज्यादा से ज्यादा भार को सहन कर सकें। इसीलिए



वाहनों की शीट मेटल अलग हाथों से बनाई जाती है और अगर हम घर के किसी उपकरण जैसे कि फ्रिज की शीट मेटल अलग धातु से बनाई जाती है। तो इसी प्रकार अलग–अलग प्रकार की धातुओं का इस्तेमाल करके शीट मेटल बनाई जाती है जिनके बारे में हम जानेंगे।

स्टेनलेस स्टील : इस प्रकार की शीट मेटल स्टील के साथ में निकल, क्रोमियम और कुछ अन्य धातुओं को मिलाकर बनाई जाती है। यह शीट मेटल काफी महँगी होती है। इसलिए इसका इस्तेमाल केमिकल प्लांट, रसोई के बर्तन इत्यादि बनाने के लिए किया जाता है।

कॉपर शीट मेटल : इस प्रकार की शीट मेटल का इस्तेमाल कोल्ड रोल्ड या हॉट रोल्ड के रूप में किया जाता है। इसका इस्तेमाल बर्तन, बॉयलर, रूफ फ्लेंशिग इत्यादि के जगह पर किया जाता है।

अल्युमिनियम शीट मेटल : अल्युमिनियम बहुत हल्की और काफी नर्म धातु है इसलिए इसका इस्तेमाल शुद्ध अवस्था में नहीं किया जा सकता इसलिए अल्युमिनियम के साथ में कॉपर, सिलिकॉन, लोहे इत्यादि को मिलाया जाता है और इसका इस्तेमाल इलेट्रिकल, ट्रांसपोर्ट इंडस्ट्री, घरेलु उपकरण बनाने के लिए किया जाता है।

ब्लैक आयरन शीट मेटल : इस प्रकार की शीट मेटल में बिना कोटिंग किया हुआ लोहा होता है जिस पर बहुत ही आसानी से जंग लग जाता है। इसलिए इस प्रकार की शीट मेटल का इस्तेमाल टैंक, पाइप इत्यादि बनाने के लिए किया जाता है क्योंकि इस प्रकार की वस्तुओं पर हम पेंट करके लोहे को जंग लगने से बचा सकते है।

गैल्वेनाइज्ड आयरन : गैल्वेनाइज्ड आयरन से बनी शीट मेटल को हम GI शीट के नाम से भी जानते है। इस प्रकार की शीट मेटल में लोहे पर जिंक की कोटिंग की जाती है। जिंक की यह कोडिंग कोराजन को रोकती है और लोहे की दिखावट में भी सुंदरता लाती है। इस प्रकार की शीट मेटल का इस्तेमाल बर्तन, बाल्टियाँ, पाईप इत्यादि बनाने के लिए किया जाता है।

यह कुछ महत्वपूर्ण धातुएं थी जिनका इस्तेमाल शीट मेटल के रूप में किया जाता है, इनके अलावा लोहे पर टिन की कोटिंग करके भी शीट मेटल के रूप में उपयोग किया जाता है और लेड धातु का भी इस्तेमाल शीट मेटल के रूप में किया जाता है।

"मैं सोया और स्वप्न देखा कि जीवन आनंद है, मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है, मैंने सेवा की और पाया कि सेवा आनंद है।"

– कविगुरू रबिन्द्रनाथ ठाकुर

एक देश एक राशन कार्ड योजना
One Nation One Ration Card Scheme



पी डी सिद्दीकी
पूर्व उप प्रबंधक (राजभाषा)

मानव एक सामाजिक विवेकशील प्राणी है। मानव को प्रत्येक काम करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इस ऊर्जा की पूर्ति अनाज के माध्यम से होती है। इसीलिए कहा गया है कि अन्न है तो जीवन है। बिना अन्न का मानव का शारीरिक एवं मानसिक विकास संभव नहीं है।

मानव जीवन ईश्वर प्रदत्त होता है, परन्तु लौकिक गति और व्यवहार अन्न से प्राप्त ऊर्जा से होता है। इसलिए ऋषि कहते हैं कि 'प्राणो वा अन्नं' अर्थातब प्राण ही अन्न है।

''भूखे पेट भजन नहीं होय गोपाला ले तेरी कंठी ले तेरी माला'' यह लोकोक्ति आपने तो सुना ही होगा।

इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, भारत वर्ष के सभी नागरिकों को पहले राशन कार्ड जारी किया गया होगा और अब उसमें काफी सुधार जारी है ताकि यह सुविधा जरुरतमंद भारतवासी को आसानी से मिल सके।

राशन पर जानकारी देने और निबंध लिखने का लक्ष्य हमारे सभी भारतवासियों को समय पर भरपेट भोजन मिल सके जिससे कि इनका शारिरिक, मानसिक और सामाजिक विकास हो सके।



बायोमैट्रिक ऑथेंटिकेशन से की जा सकेगी राशन की प्राप्ति:

केंद्रीय उपभोक्ता मामले खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री द्वारा यह जानकारी प्रदान की गई कि देश के 77 करोड़ लोगों को One Nation One Ration Card के अंतर्गत कवर किया गया है, जिसके माध्यम से देश के नागरिक कहीं से भी अपने हिस्से का अनाज खरीद सकते हैं। इस योजना को प्रवासी श्रमिकों को राशन प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए किया गया था। यह योजना अब 35 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में उपलब्ध है जिसमें 77 करोड़ लाभार्थी शामिल है। अब प्रवासी श्रमिक अपनी राशन की प्राप्ति उस स्थान से कर सकते है जहां वह रह रहे हो।

अब नागरिकों द्वारा अपने आधार नंबर के माध्यम से राशन की प्राप्ति की जाएगी। लाभार्थी द्वारा इस योजना के माध्यम से अब किसी भी उचित मूल्य की दुकान से राशन की प्राप्ति की जा सकेगी। इस योजना को बिना किसी भेदभाव के लागू किया गया है। अब तक इस योजना का लाभ लगभग 7 करोड़ नागरिकों द्वारा प्राप्त किया गया है।

इस योजना की पोर्टेबिलिटी (EPOS) Electronic Point of Sale मशीन पर निर्भर करती है। Epos मशीन से लाभार्थियों की पहचान और पात्रता को बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के माध्यम से सत्यापित

किया जाता है। दिल्ली सरकार ने सन 2018 epos के उपयोग को निलंबित कर दिया था क्योंकि विभिन्न प्रकार की नेटवर्क से संबंधित शिकायतें प्रमाणीकरण विफलता और वास्तविक लाभार्थियों को बाहर करने की शिकायत सामने आ रही थी। जुलाई 2022 में दिल्ली में epos को फिर से आरंभ कर दिया गया।

One Nation One Ration Card Scheme के मुख्य तथ्य

योजना का नाम	एक देश एक राशन कार्ड योजना
इनके द्वारा पेश किया गया	स्व. श्री राम विलास पासवान यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी व्यक्ति सब्सिडी वाले खाद्यान्न प्राप्त करने से वंचित न रहे।
योजना की समय सीमा	30 जून 2030
लाभार्थी	अखिल भारतीय राशन कार्ड धारक
नोडल एजेंसी	भारतीय खाद्य निगम

राशन ट्रांजैक्शन में हुई वृद्धि

देश के नागरिकों को देशभर में राशन की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए सरकार द्वारा जपश Nation One Ration Card का शुभारंभ किया गया था। सभी राशन कार्ड धारक इस योजना के माध्यम से देश की किसी भी फेयर प्राइस शॉप से राशन खरीद सकते हैं। इस योजना के संचालन के लिए पीडीएस नेटवर्क को डिजिटल किया गया है। पीडीएस नेटवर्क डिजिटल करने के लिए लाभार्थी के राशन कार्ड को आधार कार्ड से जोड़ा गया।

इसके अलावा फेयर प्राइस शॉप में पॉइंट ऑफ सेल मशीन भी लगाई गई। उच्चतम न्यायालय द्वारा सभी राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश को यह निर्देश दिया गया था कि 31 जुलाई 2023 तक वह इस योजना को अपने राज्य में लागू कर लें। अब तक भारत के 34 राज्यों ने इस योजना को लागू कर दिया है।

इस योजना की सफलता की निगरानी इंटीग्रेटेड मैनेजमेंट ऑफ पब्लिक डिसटीब्यूशन सिस्टम एवं अन्न वितरण पोर्टल के माध्यम से की जा सकती है। पिछले 1.5 साल में एक देश एक राशन कार्ड के माध्यम से 66 टाइम्स राशन की ट्रांजैक्शन में वृद्धि हुई है।

One Nation One Ration Card Yojana के कार्यान्वयन की समीक्षा करने के लिए आयोजित किया गया सर्वेक्षण :

- जैसे कि आप सभी लोग जानते हैं वर्ष 2019 में सरकार द्वारा एक देश एक राशन कार्ड योजना का शुभारंभ किया गया था।
- इस योजना का मुख्य उद्देश्य भारत के सार्वजनिक वितरण प्रणाली में क्रांति लाना है।
- मुख्य रूप से इस योजना को प्रवासी श्रमिकों के लिए आरंभ किया गया था।
- इस योजना के अंतर्गत खाद्य सुरक्षा लाभ को

पोर्टेबल कर दिया गया है।

- देश के राशन कार्ड धारक अब देश में कहीं से भी राशन प्राप्त कर सकते हैं।
- अधिकारियों द्वारा इस योजना का कार्यान्वयन का आंकलन करने के लिए प्राथमिक डाटा एकत्रित किया है।
- देश भर में लगभग 6750 पीडीएस लाभार्थी और 1540 पीडीएफ डीलरों का सर्वेक्षण किया गया।
- इस सर्वेक्षण के आधार पर यह पता चला कि पोर्टेबिलिटी के बारे में व्यापक जागरूकता है लेकिन इसका लाभ सभी नागरिकों तक नहीं पहुंच रहा है।
- लगभग 48% राशन कार्ड धारक परिवार पोर्टेबिलिटी से पूरी तरह से अवगत है।
- इसके अलावा 31% परिवारों का मानना था कि कम से कम एक पोर्टेबिलिटी विकल्प संभव है।
- 20% परिवार को पोर्टेबिलिटी की कोई जानकारी नहीं थी।
- इसके अलावा सर्वेक्षण के माध्यम से यह जानकारी भी सामने आई कि समाज के कमजोर वर्ग को पोर्टेबिलिटी पहुंचाना मुश्किल है।
- लगभग 70% प्रवासी परिवारों द्वारा बताया गया कि पोर्टेबिलिटी के माध्यम से उनके लिए अपने राशन तक पहुंचना सकारात्मक था।
- 22% द्वारा यह जानकारी प्रदान की गई थी कि उन लोगों का राशन तक पहुंचने का अनुभव ना अच्छा था और ना ही बुरा था।
- इसके अलावा कम आय वाले लगभग 77% परिवार ऐसे थे जिनके पास राशन कार्ड नहीं था।
- सर्वेक्षण के माध्यम से यह जानकारी प्रदान की गई की इस योजना की बेहतर पहुंच सुनिश्चित करने के लिए जागरूकता में वृद्धि की जाएगी।
- यह जागरूकता फैलाने के लिए पीडीएस डीलर और समाचार पत्रों को शामिल किया जाएगा।
- इसके अलावा बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए मौजूद पीडीएस को अपग्रेड किया जाना चाहिए।

One Nation One Ration Card नई अपडेट

जैसे कि आप सभी लोग जानते है की कोरोना की वजह से पूरे देश में लॉकडाउन की स्थिति बनी हुई थी जिसका असर रोज कमाने खाने वाले लोगों पर पड़ा था। इस समस्या को कम करने के लिए सरकार ने एक देश एक राशन कार्ड योजना को प्रभावी ढ़ंग से लागू किया था। यह योजना लॉकडाउन के समय देश के लोगों के लिए काफी लाभकारी साबित हुई थी।

One Nation One Ration Card की चयन प्रक्रिया

जैसे कि आप सभी लोग जानते है कि राशन कार्ड को सभी राज्य सरकार द्वारा दो तरह से जारी किये जाते है जिसमे पहली है एपीएल (APL) राशन कार्ड और दूसरा है बीपीएल (BPL) राशन कार्ड। लोगों की आय के आधार पर एपीएल और बीपीएल राशन कार्ड उनको दिए जाते हैं। इसी प्रकार एक देश एक राशन कार्ड की भी चयन प्रक्रिया इसी आधार पर की जाएगी। एपीएल राशन कार्ड केटेगरी में कौन से लोग आते है और बीपीएल केटेगरी में कौन से लोग आते है इसकी पूरी जानकारी आज हम आपको अपने इस आर्टिकल के माध्यम से बताने जा रहे है:

एपीएल केटेगरी - इस केटेगरी में उन लोगो को रखा जाता है जो गरीबी रेखा से ऊपर जीवन यापन कर रहे है। उन लोगों को एपीएल राशन कार्ड प्रदान किया जाता है। अगर आप आर्थिक रूप से सक्षम है तो उन्हें एपीएल राशन कार्ड के लिए आवेदन करना होगा।

बीपीएल केटेगरी - इस केटेगरी के अंतर्गत देश के उन लोगों को रखा जाता है जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। उन लोगों को बीपीएल राशन कार्ड प्रदान किया जाता है। अगर आप गरीबी रेखा से नीचे आते हैं तो उन्हें बीपीएल राशन कार्ड के लिए अप्लाई करना होगा।

एक देश एक राशन कार्ड योजना में आवेदन कैसे करे?

देश के किसी भी राशन कार्ड धारक को एक देश एक राशन कार्ड योजना के अंतर्गत किसी भी तरह का ऑनलाइन तथा ऑफलाइन आवेदन करने की आवश्यकता नहीं है सभी राज्य और केंद्र सरकार स्वयं उपलब्ध आकड़ों के अनुसार लाभार्थियों के राशन कार्ड फ़ोन पर आधार कार्ड से सत्यापित कर लिंक करेंगी। इसके बाद इंटीग्रेटेड मैनेजमेंट पब्लिक डिस्टीब्यूशन सिस्टम के अंतर्गत आकड़ों को उपलब्ध कराएगी जिससे पात्र सभी नागरिक देश के किसी भी कोने से अपने हिस्से का राशन ले सकेंगे।

राशन कार्ड को आधार कार्ड से लिंक करने की प्रक्रिया:

- सर्वप्रथम आपको यूनिक आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा।
- अब आपके सामने होम पेज खुल कर आएगा।
- होम पेज पर आपको Start Now के ऑप्शन पर क्लिक करना होगा।
- इसके बाद आपको अपना एड्रेस दर्ज करना होगा।
- अब आपको राशन कार्ड बेनिफिट के विकल्प पर क्लिक करना होगा।

- इसके बाद आपको अपना Aadhar Card Number, Ration Card Number, Email Address तथा Mobile Number दर्ज करना होगा।
- अब आपके Registered Mobile Number पर एक ओटीपी आएगा।
- आपको इस OTP को ओटीपी बॉक्स में दर्ज करना होगा।
- अब आपकी स्क्रीन पर प्रोसेस कंप्लीट का मैसेज आएगा।
- इस प्रकार आप अपने राशन कार्ड को आधार से लिंक कर सकते हैं।

आगे की राह :

वैकल्पिक वितरण केंद्र खोलना: यदि आपात स्थितियाँ राशन की दुकानों पर अधिक दबाव बनाए रखती हैं जिससे सेवा बाधित होती है तो कमज़ोर समूहों तक खाद्यान्न की पहुँच सुनिश्चित करने के लिये वैकल्पिक वितरण चैनलों पर विचार किया जा सकता है।

पोषाहार सुरक्षा पर ध्यान देना: खाद्य सुरक्षा को पोषाहार सुरक्षा के व्यापक ढाँचे से देखा जाना चाहिए। इसलिये ONORC को एकीकृत बाल विकास सेवाओं, मध्याह्नभोजन, टीकाकरण, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य सुविधाओं की सुवाह्यता या पोर्टेबिलिटी को अनुमति देना चाहिये।

PDS को फूड कूपन से प्रतिस्थापित करना: दीर्घावधि में PDS प्रणाली को एक सुदृढ़ फ़ूड कूपन सिस्टम या प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण से प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

यह व्यवस्था ऐसी होगी जहाँ गरीबी रेखा से नीचे का परिवार किसी भी किराना स्टोर से बाज़ार मूल्य पर चावल, दाल, चीनी और तेल की खरीद कूपन के माध्यम से या नकद भुगतान द्वारा कर सकता है।

निष्कर्ष

ONORC खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू होने के बाद से सार्वजनिक वितरण पारिस्थितिकी तंत्र में लाया गया एक दूरगामी सुधार है। यह बेरोज़गार प्रवासी श्रमिकों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करेगा और 'सतत विकास लक्ष्य 2: वर्ष 2030 तक भुखमरी की समाप्ति' (Ending hunger by 2030) के तहत निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करेगा।

मानसिक स्वास्थ्य



हरक सिंह बिष्ट
ऑफिस स्टाफ

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ

मानसिक स्वास्थ्य एक मानसिक स्थिति है, जो व्यक्तित्व की सम्पूर्ण समन्वित क्रिया दर्शाती है। मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ–जब व्यक्ति किसी भी तरह की मानसिक बीमारी से मुक्त होता है तो उसे मानसिक रूप से स्वस्थ समझा जाता है और उसकी इस अवस्था को मानसिक स्वास्थ्य की संज्ञा दी जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य की परिभाषा

हैडफफील्ड के मतानुसार, ''सम्पूर्ण व्यक्तित्व की पूर्ण एवं सन्तुलित क्रियाशीलता को मानसिक स्वास्थ्य कहते हैं।''

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति के लक्षण

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति के लक्षण होते हैं –

- आत्म विश्वास व आत्म सम्मान की भावना।
- विचार करने की पूर्ण क्षमता।
- बुद्धि व विवेक के द्वारा निर्णय लेने की पूर्ण क्षमता।
- धैर्य व उत्साह का बना रहना।
- अपनी कमियों का ज्ञान तथा स्वीकृति।
- अपनी शक्ति व योग्यता का सही ज्ञान।
- दूसरों के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव।
- अनुभव से सीखने की क्षमता।
- मन में सदैव प्रसन्नता व प्रफुल्लता का अनुभव करना।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों के व्यवहार एवं जीवन के अध्ययन के आधार पर सामान्य रूप में कई विशेषताओं का पता लगाया है। इन विशेषताओं को हम मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की पहचान हेतु उपयोग कर सकते हैं। ताकि इनके अभाव द्वारा मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति का निदान भी किया जा सकता है।

1. उच्च आत्म-सम्मान : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों के आत्म–सम्मान का भाव काफी उच्च होता है। आत्म–सम्मान से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा स्वयं को स्वीकार किये जाने की सीमा से होता है। प्रत्येक व्यक्ति का स्वयं को यानि कि स्वयं के कार्यों को मापने का अपना एक पैमाना होता है जिस पर वह अपने गुणों एवं कार्यों, कुशलताओं एवं निर्णयों का स्वयं के बारे में स्वयं द्वारा बनाई गई छवि के आलोक में मूल्यांकन करता है।

यदि वह इस पैमाने पर अपने आप को स्वयं के पैमाने पर औसत से ऊपर की श्रेणी में अवलोकित करता

है तब उसे गर्व का अनुभव होता है और परिणामस्वरूप उसका आत्म सम्मान बढ़ जाता है। वहीं यदि वह स्वयं को इस पैमाने में औसत से नीचे की श्रेणी में देखता है तो उसका आत्म सम्मान घट जाता है। इस आत्म–सम्मान का व्यक्ति के आत्म विश्वास से सीधा संबंध होता है।

जो व्यक्ति स्वयं की नजरों में श्रेष्ठ होता है उसका आत्म–विश्वास काफी बढ़ा हुआ होता है, एवं जो व्यक्ति किसी कार्य के कारण अपनी नजरों में गिर जाता है उसके आत्म–विश्वास में भी गिरावट आ जाती है। परिणाम–स्वरूप उसके आत्म–सम्मान को ठेस पहुँचती है। जब यह आत्म–सम्मान बार बार औसत से नीचे की श्रेणी में आता रहता है अथवा लम्बे समय के लिए औसत से नीचे ही रहता है तब व्यक्ति में दोषभाव जाग्रत हो जाता है तथा उसे मानसिक समस्याएं अथवा मानसिक विकृतियाँ घेर लेती हैं।

2. आत्म-बोध होना : जिन व्यक्तियों को अपने स्व का बोध होता हैं वे मानसिक रूप से अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा ज्यादा स्वस्थ होते हैं। आत्म–बोध से तात्पर्य स्वयं के व्यक्तित्व से संबंधित सभी प्रकट एवं अप्रकट पहलुओं एवं तत्वों से परिचित एवं सजग होने से होता है। जब हम यह जानते हैं कि हमारे विचार कैसे हैं? उनका स्तर कैसा है? हमारे भावों को प्रकृति कैसी है? एवं हमारा व्यवहार किस प्रकार का है? तो इससे हम स्वयं के व्यवहार के प्रति अत्यंत ही स्पष्ट होते हैं। हमें अपनी इच्छाओं, अपनी प्रेरणाओं एवं अपनी आकांक्षाओं के बारे में ज्ञान होता है। साथ ही हमें अपनी सामर्थ्य एवं कमियों का भी ज्ञान होता है। ऐसी स्थिति वाले व्यक्ति जीवन में स्वयं एवं स्वयं से जुड़े लोगों के सम्बन्ध में सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।

ऐसे व्यक्ति मानसिक उलझनों के शिकार नहीं होते एवं फलत: उनका मानसिक स्वास्थ्य उत्तम स्तर का होता है।

3. स्व-मूल्यांकन की प्रवृत्ति : जिन व्यक्तियों में स्व–मूल्यांकन की प्रवृत्ति होती है वे मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं क्योंकि स्व–मूल्यांकन की प्रवृत्ति उन्हें सदैव आईना दिखलाती रहती है। वे स्वयं के गुणों एवं दोषों से अनवरत परिचित होते रहते हैं एवं किसी भी प्रकार के भ्रम अथवा संभ्रांति कि गुंजाइश भी नहीं रहती है। ऐसे व्यक्ति अपने शक्ति एवं गुणों से परिचित होते हैं एवं जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में अपने गुण एवं दोषों के आलोक में फैसले करते हैं। इनमें तटस्थता को गुण होने पर अपने संबंध में किसी भी प्रकार की गलतफहमी नहीं रहती है तथा उचित फैसले करने में सक्षम होते हैं।

4. सुरक्षित होने का भाव होना : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों में सुरक्षा का भाव ज्यादा होता है। उनमें समाज का एक स्वीकृत सदस्य होने की भावना काफी तीव्र होती है। यह भाव उन्हें इस उम्मीद से प्राप्त होता है कि चूंकि वे समाज के सदस्य हैं अतएव किसी भी प्रकार की विपरीत स्थिति उत्पन्न होने पर समाज के लोग उनकी

सहायता के लिए आगे आयेंगे। समाज उनके विकास में सहायक होगा तथा वे भी समाज की उन्नति में अपना योगदान देंगे। ऐसे लोगों में यह भावना होती है कि लोग उनके भावों एवं विचारों का आदर करते हैं।

वह दूसरों के साथ निडर होकर व्यवहार करता है तथा खुलकर हंसी–मजाक में भाग लेता है। समूह का दबाव पड़ने के बावजूद भी वह अपनी इच्छाओं को दमित नहीं करने की कोशिश करता है।

फलत: मानसिक अस्वस्थता से सदैव दूर रहता है।

5. संतुष्टिप्रदायक संबंध बनाने की क्षमता : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों में परिवार एवं समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ ऐसे संबंध विनिर्मित करने की क्षमता पायी जाती हैं जो कि उन्हें जीवन में संतुष्टि प्रदान करती है, उन्हें जीवन में सार्थकता का अहसास होता है एवं वे प्रसन्न रहते हैं। संबंध उन्हें बोझ प्रतीत नहीं होते बल्कि अपने जीवन का आवश्यक एवं सहायक अंग प्रतीत होते हैं। वे दूसरों के सम्मुख कभी भी अवास्तविक माँग पेश नहीं करते हैं। परिणामस्वरूप उनका संबंध दूसरों के साथ सदैव संतोषजनक बना रहता है।

6. दैहिक इच्छाओं की संतुष्टि : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों में अपनी शारीरिक इच्छाओं के संबंध में संतुष्टि का भाव पाया जाता है। उन्हें सदैव यह लगता है कि उनके शरीर अथवा शरीर के विभिन्न अंगों की जो भी आवश्यकताएं हैं वे पूरी हो रही हैं। प्राय: ऐसे व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं परिणामस्वरूप वे सोचते हैं कि उनके हृदय लीवर, किडनी, पेट आदि अंग अपना अपना कार्य सुचारू रूप से कर रहे हैं।

दूसरे रूप में जब व्यक्ति के शरीर को आनंद देने वाली आवश्कताएं जैसे कि तन ढकने के लिए वस्त्र, जिह्वा के स्वाद पूर्ति के लिए व्यंजन, सुनने के लिए मधुर संगीत आदि उपलब्ध होते रहते हैं तो वे आनन्दित होते रहते हैं। साधन नहीं मिलने पर भी वे इनकी पूर्ति दूसरे माध्यमों से करने में भी सक्षम होते हैं। परिणामस्वरूप मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं।

सरल शब्दों में कहें तो वे शारीरिक इच्छाओं के प्रति अनासक्त रहते हैं सुविधा साधन मिलने पर प्रचुर मात्रा में उपभोग करते हैं नहीं मिलने पर बिल्कुल भी विचलित नहीं होते एवं प्रसन्न रहते हैं।

7. प्रसन्न रहने एवं उत्पादकता की क्षमता : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों में प्रसन्न रहने की आदत पायी जाती है। साथ ही ऐसे व्यक्ति अपने कार्यों में काफी उत्पादक होते हैं। उत्पादक होने से तात्पर्य इनके किसी भी कार्य के उद्देश्य विहीन नहीं होने से एवं किसी भी कार्य के धनात्मक परिणामविहीन नहीं होने से होता है। ये अपना जो भी समय, श्रम एवं धन जिस किसी भी कार्य में लगाते हैं उसमें कुछ न कुछ सृजन ही करते हैं। इनका कोई भी कार्य निरर्थक नहीं होता है।

सार्थक कार्यों को करते रहने से उन्हें प्रसन्नता के अवसर मिलते रहते हैं एवं प्रवृत्ति हो जाने पर वे खुशमिजाज हो जाते हैं। उनके संपर्क में आने पर दूसरे

व्यक्तियों में भी प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है।

8. बढ़िया शारीरिक स्वास्थ्य : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों का शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम कोटि का होता है। कहा भी गया है कि स्वच्छ शरीर में ही स्वच्छ मन निवास करता है। शरीर की डोर मन के साथ बंधी हुई होती है। मन को शरीर के साथ बांधने वाली यह डोर प्राण तत्व से विनिर्मित होती है। यह प्राण शरीर में चयापचय एवं श्वास–प्रश्वास की प्रक्रिया के माध्यम से विस्तार पाता रहता है जिससे मन को अपने कार्यों को सम्पादित करने के लिए पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा उपलब्ध होती रहती है। फलत: मन प्रसन्न रहता है।

9. तनाव एवं अतिसंवेदनशीलता का अभाव : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों में तनाव एवं अतिसंवेदनशीलता का अभाव पाया जाता है। या यूँ कहा जा सकता है कि इनके अभाव के कारण ये व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक लेजारस के अनुसार तनाव एक मानसिक स्थिति की नाम है। यह मानसिक स्थिति व्यक्ति के सम्मुख समाज एवं वातावरण द्वारा पेश की गयी चुनौतियों के संदर्भ में इन चुनौतियों से निपटने हेतु उसकी तैयारियों के आलोक में तनावपूर्ण अथवा तनावरहित के रूप में निर्धारित होती है।

दूसरें शब्दों में जब व्यक्ति को चुनौती से निपटने के संसाधन एवं अपनी क्षमता में कोई कमी महसूस होती है तब उस कमी की मात्रा के अनुसार उसे कम या ज्यादा तनाव का अनुभव होता है। वहीं जब उसे अपनी क्षमता, अपने संसाधन एवं सपोर्ट सिस्टम पर भरोसा होता है तब उसे तनाव का अनुभव नहीं होता है।

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों को तनाव नही होने के पीछे उनकी जीवन की चुनौतियों को सबक के रूप में लेने की प्रवृत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति जीवन में घटने वाली घटनाओं जैसेकि प्रशंसा या निन्दा से विचलित नहीं होते बल्कि वे असंवेदनशील रहते हुए अपने ऊपर इनका अधिक प्रभाव पड़ने नहीं देते हैं।

10. वास्तविक प्रत्यक्षण की क्षमता : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति किसी वस्तु, घटना या चीज का प्रत्यक्षण पक्षपात रहित होकर वस्तुनिष्ठ तरीके से करते हैं। वे इन चीजों को प्रति वही नजरिया या धारणा विनिर्मित करते हैं जो कि वास्तविकता होती है। वे धारणाएं बनाते समय कल्पनाओं को, अपने पूर्वाग्रहों को भाव संवेगों को अपने ऊपर हावी होने नहीं देते हैं। इससे उन्हें सदैव वास्तविकता का बोध रहता है परिणामस्वरूप मानसिक उलझनों में वे नहीं पड़ते तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं।

11. जीवन दर्शन स्पष्टता होना : मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों में जीवन दर्शन की स्पष्टता होती है। उनके जीवन का सिद्धान्त स्पष्ट होता है। उन्हें पता होता है कि उन्हें अपने जीवन में किस तरह से आगे बढ़ना है? क्यों बढ़ना है? कैसे बढ़ना है? उनका यह जीवन दर्शन धर्म आधारित भी हो सकता है एवं धर्म से परे भी हो सकता है। इनमें द्वन्द्वों का अभाव होता है। इनके जीवन में

विरोधाभास की स्थितियाँ कम ही देखने को मिलती हैं।

12. स्पष्ट जीवन लक्ष्य होना : वे लोग जिनका जीवन लक्ष्य स्पष्ट होता है वे मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं। मनोवैज्ञानिक इसके कारण जीवन लक्ष्य एवं जीवन शैली में सामंजस्य को मानते हैं। उनके अनुसार जिस व्यक्ति के सम्मुख उसका जीवन लक्ष्य स्पष्ट होता है तथा जीवन लक्ष्य को पूरा करने की त्वरित अभिलाषा होती है वह अपना समय निरर्थक कार्यों में बर्बाद नहीं करता है वह जीवन लक्ष्य को पूरा करने हेतु तदानुरूप जीवन शैली विनिर्मित करता है। इसे जीवन लक्ष्य को पूरा करने हेतु आवश्यक तैयारियों के रूप में देखा जा सकता है।

जीवन लक्ष्य एवं जीवनशैली के बीच जितना सामंजस्य एवं सन्निकटता होती है जीवन लक्ष्य की पूर्ति उतनी ही सहज एवं सरल हो जाती है। परिणामस्वरूप ऐसे व्यक्तियों को जीवन लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य होती है। इससे उन्हें जीवन में सार्थकता का अहसास सदैव से ही रहता है तथा वे प्रसन्न रहते हैं एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं।

13. सकारात्मक चिंतन : जीवन के प्रति तथा दुनिया में स्वयं के होने के प्रति सकारात्मक नजरिया रखने वाले, तथा जीवन में स्वयं के साथ घटने वाली हर वैचारिक, भावनात्मक तथा व्यवहारिक घटना के प्रति जो सकारात्मक नज़रिया रखते हैं उसके धनात्मक पक्षों पर प्रमुखता से जोर देते हैं। ऐसे व्यक्ति निराशा, अवसाद का शिकार नहीं होते हैं। उनमें नाउम्मीदी एवं निस्सहायता भी उत्पन्न नहीं होती है परिणामस्वरूप मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं।

14. ईश्वर विश्वास : जिन व्यक्तियों में ईश्वर विश्वास कूट कूट कर भरा होता है ऐसे व्यक्ति भी मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं। मनोवैज्ञानिक इसका कारण उन्हें मिलने वाले भावनात्मक संबंल एवं सपोर्ट को मानते हैं। उनके अनुसार ईश्वर विश्वासी कभी भी स्वयं को अकेला एवं असहाय महसूस नहीं करता हैं।

परिणामस्वरूप जीवन की विषम से विषम परिस्थिति में भी अपने आत्म–विश्वास को बनाये रखता है। उसकी आशा का दीपक कभी बुझता नहीं है। अतएव वह मानसिक रूप से स्वस्थ रहता है।

15. दूसरों से अपेक्षाओं का अभाव : ऐसे व्यक्ति जो अपने कर्तव्य कर्मों को केवल किये जाने वाला कार्य समझकर सम्पादित करते हैं एवं उस कार्य से होने वाले परिणामों से स्वयं को असम्बद्ध रखते हैं। दूसरों से प्रत्युत्तर में किसी प्रकार की अपेक्षा अथवा आशा नहीं करते हैं वे सदैव प्रसन्न रहते हैं। मनोवैज्ञानिक इसके कारण उनके मानसिक प्रसन्नता के परआश्रित नहीं होने की स्थिति को ठहराते हैं। ये व्यक्ति दूसरों के द्वारा उनके साथ किये गये व्यवहार से अपनी प्रसन्नता को जोड़कर नहीं रखते हैं बल्कि वे दोनों चीजों को अलग–अलग रखकर चलते हैं।

परिणामस्वरूप भावनात्मक द्वन्द्वों में नहीं फंसते हैं एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्टहोता है कि मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले बहुत से कारक हैं। इन कारकों को नियंत्रित करके मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत बनाया जा सकता है।

पनडुब्बी निर्माण और माझगांव डॉक



श्रीनिवास सिन्हा
अपर महाप्रबंधक (मा.स. एवं राभा)

भारतीय नौसेना के परिप्रेक्ष्य में, अपने आप को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने की एक साकार पहल – अस्सी के दशक तक आते–आते भारतीय नौसेना को इस बात का एहसास होने लगा कि उस समय सैनिक संसाधनों में मौजूद कुल सबमैरीन सामरिक दृष्टि से पर्याप्त नहीं है। इसके लिए तत्कालीन भारत सरकार इस क्षेत्र में प्रयास करने लगी।

इसी कालावधि में अन्य विकसित देश जैसे– अमेरिका, रूस, जर्मनी, जापान एवं कोरिया आदि राष्ट्रों ने सबमैरीन निर्माण क्षेत्र में महारत ही नहीं हासिल कर लिया था अपितु दूसरे देशों को सबमैरीन निर्यात भी कर रहे थे। प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात एक दबाव बनने लगा था कि भारतीय सेनाओं (स्थल, जल एवं वायु) को कैसे मजबूत किया जाए।



(शिशुमार – शिशुमार श्रेणी की प्रथम सबमैरीन)

इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारत सरकार ने जर्मनी के कील शहर में स्थित एच.डी.डबल्यू (HDW,Howaldtswerke-Deutsche Werft at Keil) कंपनी को तकनीकी स्थानांतरण अनुबंध (Under Techonology Transfer Agreement, 1986-91) के अंतर्गत 4 सबमैरीन के निर्माण का ऑर्डर दिया। इस अनुबंध के अनुसार दो सबमैरीन के निर्माण का कार्य जर्मनी में एवं दो सबमैरीन का निर्माण भारत में किया जाना था और पूरी परियोजना का कार्यकाल सन् 1986-91 के बीच रखा गया। जर्मनी ने प्रथम बोट SSK (Hunter-killer submarine) क्लास की शिशुमार श्रेणी की आई.एन.एस शिशुमार (S44) को 22 दिसंबर 1986, को एवं 20 नवंबर 1986 में द्वितीय बोट आई.एन.एस शंकुश (S45) को भारतीय नौसेना को सौंप दिया।

भारत में उस समय का सबसे उपयुक्त शिपयार्ड माझगांव डॉक लिमिटेड (अब माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड) था जो उस समय नौसेना के लिए युद्धपोत एवं विध्वंशक (Fridget & Destroyer), ऑफशोर प्लेटफॉर्म, टैंकर, बल्ककैरियर, सप्लाई वेसेल और पेट्रोल बोट बनाने में संलग्न था।

भारत में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को देखते हुए तत्कालीन भारत की प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गाँधी ने 6 मई 1984 को अपने कर कमलों द्वारा ईस्ट यार्ड (East Yard) का शिलान्याश किया जो बाद में सबमैरीन यार्ड के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसको सबमैरीन डिविजन भी कहते हैं।

सबमैरीन उत्पादन के क्रम में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने अपनी प्रथम पनडुब्बी शल्की (S46) यार्ड 11801 की लांचिंग प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गाँधी एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सोनिया गाँधी की उपस्थित में सितंबर 1989 को किया। इसी पनडुब्बी को तत्कालीन रक्षामंत्री श्री शरद पवार जी द्वारा 7 फरवरी 1992 में नौसेना को सौंप दिया गया।

मार्च 1992 को द्वितीय पनडुब्बी शंकुल (S45) यार्ड 11802 का लांचिंग तत्कालीन उप राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा एवं उनकी पत्नी श्रीमती विमला शर्मा के द्वारा किया गया और 8 मई 1994 को भारत के प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री नरसिंह राव जी ने भारतीय नौसेना को सौंप दिया।



(शंकुश– शिशुमार श्रेणी की द्वितीय सबमैरीन)

भारत सरकार द्वारा वास्तव में कुल छः पनडुब्बी का ऑर्डर दिया गया था जिसमें दो पनडुब्बी माझगांव डॉक लिमिटेड द्वारा बनानी थी और दो पनडुब्बी जर्मनी द्वारा बनाया जाना था, किन्तु सन् 1998 में पोखरण–2 परमाणु परीक्षण होने के कारण दो और सबमैरीन का मिलनेवाला ऑर्डर निरस्त हो गया।

इन दो सबमैरिनों को माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में बनायें जाने की योजना थी।

शिशुमार श्रेणी के सबमैरिनों का एक संक्षिप्त विवरण (1986-1994)

पनडुब्बी का नाम	कोड	कंपनी का नाम	कमीशण्ड की तिथि	वर्तमान स्थिति
आई.एन.एस. शिशुमार	S44	HDW (जर्मनी)	22 दिसम्बर, 1986	सक्रिय
आई.एन.एस. शंकुश	S45	HDW (जर्मनी)	20 नवम्बर, 1986	सक्रिय
आई.एन.एस. शल्की	S46	MDL (भारत)	7 फरवरी, 1992	सक्रिय
आई.एन.एस. शंकुल	S47	MDL (भारत)	28 मई, 1994	सक्रिय

शिशुमार श्रेणी के सबमैरीन की मध्यावधि मरम्मत का कार्य (MRSSK-Medium Refit of SSK Class)

भारतीय नौसेना में प्रत्येक सबमैरीन का एक निश्चित समयान्तराल के पश्चात मरम्मत का कार्य तय रहता है। इसके अंतर्गत मध्यावधि रिपेयर (MR-Medium Refit) लगभग 10 वर्ष में, एन.आर. (Normal Refit) लगभग 6 वर्ष में एवं एस.आर. (Short Refit) लगभग 2-3 वर्ष के अन्तराल में किया जाता है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई को सर्वप्रथम सन 1998 में शिशुमार श्रेणी की एस. एस. के. क्लास की प्रथम पनडुब्बी शिशुमार की मध्यावधि रिपेयर (MR-Medium Refit) का कार्य करने के लिए 135.22 करोड़ रुपये का ऑर्डर मिला। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने इसको एक चुनौती के रूप में लिया और जून 2000 तक रिपेयर का कार्य सफलतापूर्वक खत्म करके भारतीय नौसेना को सुपुर्द कर दिया।

इसी कड़ी में शिशुमार श्रेणी की द्वितीय पनडुब्बी आई.एन.एस शंकुश के रिपेयर का ऑर्डर सन् 2000 में लगभग 100 करोड़ रुपये में मिला। प्रथम पनडुब्बी की तरह द्वितीय पनडुब्बी का कार्य भी एक अत्यंत कठिन होने के बावजूद माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई ने सन् 2005 तक पूर्ण करके नौसेना को सौंप दिया। तीसरी पनडुब्बी आई.एन.एस शल्की, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई में मरम्मत कार्य करने के लिए सन् 2007 में लायी गयी। इसके रिपेयर का ऑर्डर लगभग 450.61 करोड़ रुपये था। कुशल कामगारों एवं उन्नत तकनीकी के द्वारा इसके मरम्मत और अपग्रेडेशन का काम पूर्ण कर लिया गया। इसको सन् 2009–2010 के बीच नौसेना को सौंप दिया गया।

शिशुमार श्रेणी की अंतिम सबमैरीन आई. एन. एस शंकुल के रिपेयर का ऑर्डर सन 2008 में 460.47 करोड़ रुपये का मिला। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई ने अपनी बेहतरीन तकनीक का परिचय देते हुए इसके रिपेयर एवं अपग्रेडेशन का काम सन् 2011-2012 के बीच समाप्त करके भारतीय नौसेना को दे दिया।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने दो सबमैरीन का निर्माण कार्य एवं चार सबमैरीनों का रिपेयर कार्य पूर्ण करके भारत में अन्य शिपयार्ड की परंपरा से हटकर सफलता हासिल की है। यह सबमैरीन भारतीय नौसेना के महत्वपूर्ण मिशन में कामयाब भी हुए हैं और आज भी सक्रिय हैं।

उपरोक्त कथन ने यह सत्यापित कर दिया है कि भारत सबमैरीन उत्पादन क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन गया है। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत का सबसे पुराना शिपयार्ड है। यह आधुनिक प्रौद्योगिकी उन्नयन के कारण पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रहा है।

आधुनिक पनडुब्बी परियोजना पी75

एमडीएल के लिए यह गौरव की बात है कि पूर्व खंड में निर्मित एसएसके श्रेणी की दो पनडुब्बियाँ वर्ष 1992 एवं 1994 में नौसेना में शामिल की गई और वे अपना सक्रिय सहयोग देश की समुद्री सुरक्षा में आज भी दे रही हैं।

माझगांव डॉक को अतिआधुनिक स्कोर्पिन श्रेणी पनडुब्बी निर्माण का आदेश भारतीय नौसेना की ओर से प्राप्त हुआ है। ये पनडुब्बियाँ फ्रांस की कंपनी डीसीएनएस और स्पेन की कंपनी नेवतिया के सहयोग से

निर्मित हो रही हैं। इनमें बेहतरीन स्टील्थ, दुश्मन के जहाजों एवं पण्डुब्बियों का पता लगाने की क्षमता और आक्रमण करने की शक्ति है। इस प्रभावशाली अंडर वाटर प्लेटफॉर्म से दुश्मन की जहाजों/ पण्डुब्बियों पर प्रिसीजन गाइडेड टारपीडो और मिसाइल से हमला करके अशक्त बनाने की काबिलियत है।

स्कोर्पिन पनडुब्बी में विविध कार्यों को पूरा करने की क्षमता है। जो एक आधुनिक पनडुब्बी में होनी चाहिए। जैसे एंटी सरफेस वारफेयर, इंटेलिजेंस गेदरिंग, माइन लेइंग और अपने क्षेत्र की निगरानी करना आदि।

स्कोर्पिन का निर्माण माडुलर कंस्ट्रकशन सिद्धांत के अनुसार किया जाता है जिसमें पनडुब्बी को अनेक खंडों में बांटा जाता है और खंडों को जोड़कर पूर्ण किया जाता है। उपकरण को लचीले ढंग से उठाकर क्रैडेल पर रखा जाता है और तब खंडों में लगाया जाता है।

इसमें सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होता है पनडुब्बी के अंदर 60 किमी लंबा केबल और 11 किमी की पाइपों को पनडुब्बी के चारों ओर लेइंग करना। पनडुब्बी बहुत सँकरे कम्पार्टमेंट होते हैं जिसमें कठोर सहनशीलता की आवश्यकता होती है। एमडीएल ने केबल लेइंग तथा पाईप फिक्रटिंग का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है।

स्कोर्पिन परियोजना के अंतर्गत एमडीएल ने अपनी बेमिसाल प्रतिष्ठा की स्थिति 'राष्ट्र के पोत एवं पनडुब्बी निर्माता' के रूप में स्थापित कर लिया गया है। इसे कंपनी ने अपनी योग्यता से अर्जित किया है। स्कोर्पिन श्रेणी की पहली पनडुब्बी 'कलवरी' यार्ड 11875 की कमीशनिंग गहन जांच और समुद्री परीक्षण के बाद भारतीय नौसेना को 14 दिसंबर 2017 को सुपुर्द की गई। 'कलवरी' ड्रेडेड टाइगर शार्क और ड्रेडेड डीप सी प्रिडेटर मूर्तरूप 20 वर्षों से अधिक काल के बाद किया जाएगा। पहले 'कलवरी' की कमीशनिंग 31 मई 1996 में की गई थी। नौसेना की परंपरा के अनुसार नई पोत और पनडुब्बी का नामकरण उस पोत और पनडुब्बी की डीकमीशनिंग के बाद किया जाता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा में एमडीएल का योगदान भारतीय नौसेना में दूसरे, तीसरे और चौथे स्कोर्पिन नामतः आईएनएस खंडेरी, आईएनएस करंज और आईएनएस वेला (क्रमशः 28 सितंबर, 2019, 10 मार्च, 2021 और 25 नवंबर, 2021) की कमीशनिंग के साथ जारी है। पांचवी पनडुब्बी वागीर, 20 दिसंबर 2022 को भारतीय नौसेना को सौंपी गई थी। जबकि छठी पनडुब्बी वाघशीर को 20 अप्रैल 2022 को जलावतरण किया गया था और अभी इसका परीक्षण चल रहा है।

माझगांव डॉक ने 'मेक इन इंडिया' आख्यान का प्रस्तुतिकरण अपने देश में स्वदेशी युद्धपोत एवं पनडुब्बी का निर्माण करके किया है। इसकी शुरुआत सन् 1960 में लिएंडर श्रेणी युद्धपोत से आगे बढ़कर गोदावरी श्रेणी युद्धपोत, खुकरी क्लास करवेटस, तटरक्षक, ऑफशोर पेट्रोल वेजल, मिसाइल बोट, दिल्ली, कोलकाता और विशाखापटनम श्रेणी के विध्वंसक, शिवालिक श्रेणी स्टील्थ फ्रीगेट और शल्की और कलवरी श्रेणी की पनडुब्बी के साथ जारी है।

स्कोर्पिन परियोजना के प्रौद्योगिकी स्थानांतरण और अनुभव के साथ उन्नत बुनियादी सुविधाओं की वृद्धि से एमडीएल भविष्य में पनडुब्बी परियोजना की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार है। यह राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सदैव मार्गदर्शन करेगा और दूसरों के लिए अनुसरण का पथ होगा।

स्कोर्पिन की विशेषताएँ

अद्यतन नौसेना प्रौद्योगिकी में स्कोर्पिन पनडुब्बी शामिल है। पनडुब्बी के मध्य भाग में सबटिक्स स्थित होता है जिसके साथ एकीकृत कम्बेट सिस्टम, हाईली कम्प्यूटराइज्ड सेंट्रल मैनेजमेंट सिस्टम से सुसज्जित है जिसके द्वारा पनडुब्बी के सभी सेंसर और आयुधों की निगरानी की जाती है। प्रत्येक स्कोर्पिन पनडुब्बी में कुल 31 कम्पार्टमेंट होते हैं।

पनडुब्बी वास्तव में निर्णायक स्टील्थ वेपन है। पिछले दशकों में सोनार प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण, पनडुब्बियों का पता लगाना और पनडुब्बियों को लक्ष्य बनाना बहुत ही कठिन है। विशेष रूप से हिन्द महासागर में जहाँ समुद्र का खारापन और थर्मल जोन की उपस्थिति से परिवर्तनीय जल तापमान के कारण पनडुब्बी का पता लगाना अत्यंत कठिन है। स्कोर्पिन पनडुब्बी जासूसी और काउंटर जासूसी के खेल को और कठिन बनाती है। इसका रूपांकन अत्यंत नीरव रूप में किया गया हैं जिसके कारण यह कई दिनों तक समुद्र के अंदर रह सकती है और लांगरेंज पैसिव सोनार सिगनल्स के माध्यम से समुद्र में स्कोरिंग कर सकती है जिसके द्वारा अपने आसपास के क्षेत्र में दूसरे पनडुब्बी और युद्धपोत का पता लगा सकती है।



जलावतरण के समय 'कलवरी'

भारतवंशीबहुल राष्ट्रों में हिंदी



श्री विश्वास सावंत
सहायक (पूर्व खंड–वाणिज्य)

हिंदी का सम्बंध किसी–न–किसी रूप में पूरे विश्व से है। हमारे साहित्यकारों ने विश्वबंधुत्व, विश्व मानव, विश्व धर्म, विश्व संस्कृति और एक विश्व भाषा साहित्य की माँग समय–समय पर की है। 'वसुधैव कुटुमकम' हमारा नारा रहा है। प्राचीन काल में भी हमारे देश के दार्शनिकों एवं व्यापारियों का घनिष्ठ समबंध देश–देशांतर से रहा है। कुछ विद्वानों का मत है कि एशिया के अधिकांश देश कभी भारत के अधीन थे। भारतीय संस्कृति यूरोप, अमरीका तक फैली हुई थी। हिंदी कवियों ने प्रमाण देते हुए सिद्ध किया कि हजरत मुहम्मद और ईसा मसीह इस देश में आये थे। यहाँ से प्रेरणा लेकर उन्होंने अपने–अपने मतवाद या सम्प्रदाय शुरू किये। यह भी कहा गया कि भीम, अर्जुन आदि ने पश्चिम के कई देशों को जीतकर वहाँ भारतीय संस्कृति का प्रचार किया था। बौद्ध धर्म चीन, जापान, थाईलैंड, श्रीलंका, इंडोनेशिया, बर्मा, तिब्बत आदि में जिस तरह विकसित हुआ है, वह इतिहास में दर्ज है। दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों में जैसे–इंडोनेशिया, मलयेशिया, जावा, सुमात्रा, लाओस, कम्बोडिया, म्यांमार, बियतनाम, बोर्नियो, सिंगापुर, हांगकांग आदि में हिंदू धर्म विशेष रूप से सूर्योपासना के कई साक्ष्य आज भी विद्यमान हैं।

प्राचीन काल में अरब देशों से भारत का गहरा संबंध रहा है। यहाँ से अंकगणित, दशमलव, शून्य, ज्योतिष, अन्तरिक्ष विज्ञान, धर्मशास्त्र और साहित्य का समय–समय पर निर्यात होता रहा है। यूनान, सुमेरिया, मिस्र, बेबीलोनिया आदि देशों के साथ किये गये सांस्कृतिक और व्यापारिक आदान–प्रदान के अनेक प्रमाण इतिहास ग्रंथों में सुरक्षित हैं। अंग्रेजी शासनकाल के दौरान ब्रिटिश उपनिवेश के देशों, जैसे–दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अमरीका आदि से भी भारत का संबंध स्थापित हो गया था। अंग्रेजों ने गिरमिटिया मजदूर के रूप में भारतीय मजदूरों को इन पांच देशों में बसाया था–मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, अफ्रीका और ब्रिटिश गयाना। धीरे–धीरे वहाँ भारतीयों की जनसंख्या बढ़ गयी और भारतवंशी वहाँ के मुख्य नागरिक हो गये।

फलतः आजादी के बाद उनसे हमारा प्रगाढ़ संबंध स्थापित हुआ। इन भारतवंशी देशों को भारत से जोड़े रखने का मुख्य माध्यम है–हिंदी संस्कृति। इसी उद्देश्य से 1975 में विश्व हिंदी सम्मेलन की स्थापना हुई और नागपुर में उसका प्रथम सम्मेलन आयोजित किया गया। इसके काफी पहले गांधी जी और उनके शिष्य मणिलाल डॉक्टर भवानी दयाल संन्यासी आदि दक्षिण अफ्रीका में काफ्फी कार्य कर चुके थे।

यह विश्वस्तर पर स्वीकार किया गया कि संस्कृत भाषा और देवनागरी लिपि पूरे विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। हिंदी उसकी ज्येष्ठ पुत्री है। भाषा–भाषियों की संख्या की दृष्टि से उसका क्रम दूसरा है। ऐसी स्थिति में उसे संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। इसी उद्देश्य से विश्व हिंदी सम्मेलनों को सक्रिय किया गया है।

इसका दूसरा अधिवेशन 1976 में मॉरीशस में हुआ, जिसकी अध्यक्षता वहाँ के प्रधानमंत्री 'शिवसागर रामगुलाम' ने की। 1983 में इसका तृतीय सम्मेलन दिल्ली में हुआ, जिसका उद्घाटन 'श्रीमती इंदिरा गाँधी' ने किया और अध्यक्षता कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष 'डॉ. मैकग्रेगर' ने की। चौथा सम्मेलन पुन: मॉरीशस में 1995 में हुआ। पांचवा अधिवेशन त्रिनिदाद में 1996 में आयोजित हुआ। इसमें प्रधानमंत्री वासुदेव पाण्डेय की विशेष भूमिका रही।

1. मॉरीशस

इसको 'लघु भारत' कहा जाता है। यहाँ दो–दो बार विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन हो चुके हैं। पहली बार 1976 में, जिसकी अध्यक्षता वहाँ के प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम ने की थी। दूसरी बार 1995 में। इस समय विश्व हिंदी सम्मेलन का केंद्रीय सचिवालय मॉरीशस में स्थापित है। इस देश में 70 प्रतिशत भारतवंशी हैं। उनकी राजनीतिक प्रभुता का मूलाधार है हिंदी।

मॉरीशस में भारतीयों का प्रवेश लगभग 175 वर्ष पूर्व हुआ था। अंग्रेजों ने वहाँ गन्ने की खेती करने के लिए भारतीयों को कई प्रलोभन दिये थे। यह कहा था कि यह मारीच का देश है। यहाँ पत्थरों के नीचे सोना है। भारतीयों ने दिन–रात परिश्रम किया। सोने की खानें तो नहीं मिलीं, पर उन्होंने उस पथरीली भूमि को स्वर्णमयी यानी सुनहरी फसलों से ओतप्रोत कर दिया। इस देश को उन्होंने इतना सुंदर बना दिया कि इसे 'पर्ल ऑफ द ओशन' कहा जाने लगा। इन दिनों यह विश्व का बहुत बड़ा पर्यटन केंद्र है। यह देश चीनी के उत्पाद में अग्रणी है, इसलिए इसको सफेद सोने (शकर) का देश भी कहा जाता है।

मॉरीशस में रहते हुए भारतीयों ने गाँव–गाँव में बैठकें स्थापित कीं। उन्होंने रामायण, हनुमान चालीसा, आल्हा, फाग, कजरी, सोहर, अर्थात लोक साहित्य एवं धार्मिक साहित्य का खूब प्रचार किया। लोगों ने अनेक मंदिर बनवाये। वहाँ भारत के जैसे कई तीर्थ स्थान स्थापित कर लिये। इनका खान–पान, पहनावा, पर्व–त्योहार, उत्सव, संस्कार, रीति–रिवाज, अर्थात जीवन सर्वस्व भारतीयता से ओत–प्रोत है। अब इनकी संख्या इतनी हो गयी है कि सत्ता प्राय: इन्हीं के हाथ में रहती है। यहाँ के राष्ट्रपिता हैं सर शिवसागर रामगुलाम। वर्तमान प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति भारतीय मूल के हैं। इस देश से दर्जनों की संख्या में हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। कई विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में हिंदी में एम.ए. और डॉक्टरेट आदि की उपाधि प्राप्त करने की व्यवस्था है। रेडियो, टी.वी. में हिंदी का काफी प्रचार है। हिंदी फ़िल्में वहाँ पूरी तरह छायी हुई हैं। इस देश में 'महात्मा गाँधी संस्थान' हिंदी का बहुत बड़ा केंद्र है।

मॉरीशस में जब 1833 ने दास–प्रथा का अंत हुआ, तो लगभग 4600 गिरमिटिया वहाँ ले जाये गये। उनके कल्याण के लिए 1901 में महात्मा गाँधी मॉरीशस पहुँचे। गाँधी जी के द्वारा भेजे गये मणिलाल डॉक्टर ने वहाँ 'हिंदूस्तानी' नामक पत्र का प्रकाशन शुरू किया। इसके माध्यम से वह शोषित समाज संगठित हुआ। फिर वहाँ 'आक्रोश' (मासिक) का प्रसारण शुरू हुआ। कालक्रम में मॉरीशस आर्य पत्रिका, मॉरीशस मित्र, मॉरीशस आर्य टाइम्स, आर्यवीर, जागृति, आर्योदय, जनता, जमाना, बसंत, रिमझिम, दर्पण, बालसखा, पंकज, इंद्रधनुष, स्वदेश, सनातन धर्म, सैनिक, मजदूर, नवजीवन, सुमन आदि कई पत्र प्रकाशित हुए। पिछले तीन वर्षों से विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से 'विश्व हिंदी समाचार' नामक पत्रिका निकल रही है, जो स्तरीय हिंदी पत्रकारिता का एक श्रेष्ठ नमूना है। इस समय

मॉरीशस में लगभग 1100 हिंदी विद्यालय हैं, जिनमें 2500 शिक्षक और लगभग 35,000 छात्र हैं। यहाँ की भाषा हिंदी और फ्रेंच को मिलाकर 'क्रियोली' हो गयी है। माध्यमिक विद्यालयों की संख्या भी इन दिनों 200 के आस-पास है। अब वहाँ टर्सरी (उच्च शिक्षा) की व्यवस्था भी भारतीय विश्वविद्यालयों (जैसे दिल्ली, कुरुक्षेत्र) की देख-रेख में शुरू कर दी गयी है। सम्प्रति हिंदी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद के कई मॉरीशस में चल रहे हैं।

मॉरीशस का हिंदी साहित्य सृजन महत्वपूर्ण है। अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, जागासिंह, वासुदेव विष्णुदयाल, ब्रजेन्द्र भगत मधुकर, सोमदत्त बखौरी, अजामिल माताबदल, प्रल्हाद राम शरण, रसपुंज, मुनीश्वरलाल चिंतामणि, सुचिता, रामधनी, पूजानंद आदि यहाँ के प्रमुख विगत एवं वर्तमान रचनाकार हैं। अन्य लेखकों में हरनारायण सीताराम, दीपचंद बिहारी, पूजानंद नेमा, सूर्यदेव, सीताराम, राजहीरामन, हेमराज, कल्पनालाल, गुलशन, रामखेलावन, महेशराम जियावन, सूर्यप्रसाद मंगर भगत, धर्मवीर, काशीनाथ किश्टो, जयनारायण राय, आत्माराम आदि महत्वपूर्ण हैं।

मॉरीशस में प्राय: प्रतिवर्ष भारतीय पकवानों और त्योहारों का आयोजन होता है। वहाँ ताजमहल, लालकिला और इंडिया गेट बनाये जाते हैं। राधाकृष्ण, सीताराम, शिव, हनुमान, कालीमाई, बुद्ध आदि के चित्र तथा श्रीविग्रह बहुत लोकप्रिय हैं। पर्यटन मॉरीशस का सबसे बड़ा उद्योग है। अब आवश्यकता है कि हिंदी को बोलचाल और साहित्य की भाषा के साथ-साथ वहाँ रोजगार की भाषा भी बनाया जाये। इसे हार्डब्रिड भाषा बनाना समय की माँग है।

इधर विज्ञान, टेक्नोलॉजी का प्रचार बढ़ा है। इनके साथ ही अंग्रेजियत भी बढ़ी है। हिंदी को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे माध्यम भाषा बनाया जाये और ज्ञान-विज्ञानपरक लेखन से आपूरित किया जाये।

2. फीजी

प्रशांत महासागर में ऑस्ट्रेलिया के निकट स्थित है यह देश। वहाँ अब लगभग 52 प्रतिशत भारतवंशी रह रहे हैं। 1879 से 2014 तक वहाँ लगभग 30 हजार भारतीय श्रमिक गये। ये मूलरूप से सनातन धर्मावलंबी थे। फीजी लगभग 100 वर्षों तक ब्रिटेन का उपनिवेश रहा है, अतएव अंग्रेजी भी वहाँ बहुश: प्रयुक्त होती है। इन श्रमिकों को आरंभ में अनेक प्रकार की यातनाएँ दी गयी। अस्तु, इन्होंने यह अनुभव किया कि गोरों से निपटने के लिए संगठित होना बहुत आवश्यक है। संगठन का आधार था भारतीय धर्म और उसका माध्यम थी हिंदी भाषा। ये गिरमिटिया लोग अपने साथ रामायण, कबीर भजनावली, हनुमान चालीसा, सत्यनारायण कथा, विश्राम सागर, आल्हा, बिरहा, पद, भजन आदि ले गये थे। इन्होंने वहाँ प्रति संध्याकाल पेड़ों के नीचे एकत्र होकर ढोलक, हारमोनियम एवं मँजीरे के साथ सामूहिक रूप से गाना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे इनका एक सुदृढ़ संगठन तैयार हो गया।

3. सूरीनाम

यह दक्षिणी अमरीका का एक छोटा-सा देश है। यहाँ काफी बड़ी संख्या में भारतवंशी धन-धान्य संपन्न जीवन जी रहे हैं। पहले इस देश पर 'डच' लोगों का अधिकार था। वहाँ के मूल निवासी 'नीग्रो' दास-प्रथा के अंतर्गत बँधुआ मजदूर के रूप में काम करते थे। दास-प्रथा के समाप्त हो जाने के पश्चातब नीग्रो लोगों ने काम करने से पूरी तरह मना कर दिया, तो डच शासन ने भारत की अंग्रेज सरकार से समझौता करके एक 'एग्रीमेंट' के

अंतर्गत लगभग 33000 भारतीय मजदूरों को सूरीनाम बुलाया। इन्हें 'गिरमिटिया' मजदूर कहा गया। ये 'गिरमिटिया' मूल रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के सीमांत जिलों से गये थे। इन्हें यह प्रलोभन दिया गया था कि सूरीनाम मूलतः श्रीराम का देश है, इसलिए वहाँ जाना पुण्य का कार्य होगा। लगभग 130 वर्ष पूर्व जानेवाले इन गिरिमिटिया मजदूरों में से लगभग एक-तिहाई लोग पांच वर्ष की अवधि बीत जाने पर भारत वापस आ गये। शेष वहीं पर बस गये। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी जमीन-जायदाद बना ली। सूरीनाम के स्वतंत्र होने पर इन भारतवंशियों की स्थिति सुदृढ़ हो गयी, क्योंकि पूरी आबादी में इनका अनुपात 50 प्रतिशत है।

4. त्रिनिदाद टुबैगो

इस द्वीप समूह को वेस्टइंडीज भी कहा जाता है। यह देश दक्षिणी अमरीका के उत्तर में है। यहाँ 1845 में भारतीय मजदूर (जहाजी भाई) पहुँचे थे। वे मूलतः अवधी-भोजपुरी भाषी थे। आज इनकी संख्या 40 प्रतिशत है। ये त्रिनी हिंदी बोलते हैं। हनुमान चालीसा, आल्हा आदि उनके प्रिय ग्रंथ हैं। इनकी संख्या और जनसंपर्क की समस्या से प्रेरित होकर सर्वप्रथम मिशनरियों ने वहीं हिंदी शिक्षण का कार्य शुरू किया। भारतीय मजदूर दिन भर गन्ना, चाय और कॉफी के खेतों में काम करते थे। सायंकाल भौतिक यातनाओं से मुक्ति पाने हेतु वे एक स्थान पर एकत्र होकर हिंदी पद भजन गाते थे।

त्रिनिदाद में इन दिनों कई हिंदी लेखक हैं। उनके बीच 4 अप्रैल, 1966 को पाँचवे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन हुआ। यहाँ के हिंदी लेखक कविता, कहानी, समीक्षा सबसे जुड़े हुए हैं। अनुवाद का भी काफी प्रचलन है। इस देश से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में आर्य संदेश, हिंदू, कोहिनूर, ज्योति (द्विमासिक) की महत्वपूर्ण भूमिका है।

5. ब्रिटिश गयाना

यह 365 द्वीपों का एक समूह है, जो दक्षिणी अमरीका के उत्तरी-पूर्वी तट पर स्थित है। इसके सीमावर्ती देश हैं-ब्राजील, सूरीनाम, बेनीजुईला। यहाँ के मूल निवासियों को अमरेडियन कहते हैं। इसका अर्थ है बहुत अधिक पानी से भरी हुई भूमि। यहाँ नदियाँ बहुत हैं। इस देश में पहले डच, फ्रेंच और अंग्रेज रहते थे। ये आपस में लड़ते रहते थे। इन तीनों ने गयाना को तीन भागों में विभाजित कर दिया, फलतः 1814 में फ्रेंच गयाना, डच गयाना और ब्रिटिश गयाना स्वतंत्र देश हो गये। बाद में डच गयाना सूरीनाम हो गया और ब्रिटिश गयाना को गयाना कहा जाने लगा। इन दिनों यहाँ भारतीय, अफ्रीका और चीनी अपेक्षाकृत अधिक हैं। भारतवंशी 55 प्रतिशत हैं। इन्हें 'इंडो गायनीज' कहा जाता है।

6. नेटाल (द. अफ्रीका)

यह दक्षिण अफ्रीका का देश है। यहाँ डरबन नगर में भारतवंशियों की काफी संख्या है। यद्यपि यहाँ अंग्रेजी का प्रभाव अधिक है, फिर भी हिंदी समझनेवाले काफी हैं। यहाँ महात्मा गाँधी, भवानी दयाल संन्यासी, नरदेव वेदालंकार आदि के प्रयास से हिंदी का एक स्वरूप बना है। अभी उसे सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता है। जोहान्सवर्ग में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन से यहाँ हिंदी को पर्याप्त प्रश्रय प्राप्त हुआ है।

तात्पर्य यह है कि भारतवंशीबहुल राष्ट्रों और उनकी इन भाषाओं को समझना विश्व हिंदी की रूप रचना के लिए अपरिहार्य है। इन्हें भारतीय हिंदी के साथ जोड़कर एक समेकित देशांतरी हिंदी बनायी जा सकती है।

माझगांव डॉक के कार्यक्रमों की झलकियाँ





एमडीएल निर्मित एमसीसीबी और डिस्ट्रिब्यूशन बॉक्स दिनांक 14.10.2022 को यार्ड–12706 को सौंपा गया।



दिनांक 08.11.2022 को एमडीएल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट में विजेता टीम ट्रॉफी के साथ।



दिनांक 20.20.2022 को एमडीएल 'सागरिका' सभागार में प्रिवेंटिव सतर्कता पर एक चर्चा का आयोजन किया गया था।



26 जनवरी 2023 गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज को फहराते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



एडमिरल आर हरी कुमार, पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएसएम एडीसी चीफ़ ऑफ नेवल स्टाफ द्वारा दिनांक 23.01.2023 को एमडीएल निर्मित पी75 स्कोर्पिन पनडुब्बी 'वागीर' की कमीशनिंग

माझगांव डॉक के कार्यक्रमों की झलकियाँ



शिव जयंती के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए कमांडर जसबीर सिंह, निदेशक (पनडुब्बी एवं भारी अभियांत्रिकी), डॉ संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) एवं श्री अरुण कुमार चाँद, महाप्रबंधक (मानव संसाधन)



हिंदी पखवाड़ा 2022 विजेता को निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) द्वारा प्रमाणपत्र देते हुए



एमडीएल कर्मचारियों को आयुर्वेदिक दवाईओं के उपयोगिता एवं दैनिक व्यवहार में इसकी उपादयता पर चर्चा करती हुए डॉ सोनम मेमाने



163 वीं राजभाषा तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ प्रबंधकगण



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सागरिका सभागृह में उपस्थित महिला कर्मचारीगण



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दीया प्रतियोगिता में भाग लेते हुए महिला प्रतिभागी

माझगांव डॉक के कार्यक्रमों की झलकियाँ



मिडगेट सबमरीन के लिए हल प्रोटोटाइप का उद्घाटन और पूजा में उपस्थित कमांडर जसबीर सिंह, निदेशक (पनडुब्बी एवं भारी अभियांत्रिकी) के साथ पूर्व खंड के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण



मराठी दिवस के अवसर पर विजेता प्रतिभागियों के साथ बैठे वरिष्ठ अधिकारीगण



प्रशिक्षुता अधिनियम 1961 के अंतर्गत स्नातक/डिप्लोमा प्रशिक्षुओं को प्रमाणपत्र वितरण



प्रशिक्षुता अधिनियम 1961 के अंतर्गत स्नातक/डिप्लोमा प्रशिक्षुओं को प्रमाणपत्र वितरण



भारतरत्न डॉ भीमराव आंबेडकर की 132 वीं जयंती पर उपस्थित एमडीएल के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण



भारतरत्न डॉ भीमराव आंबेडकर की 132 वीं जयंती के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कमांडर वासुदेव पुराणिक, निदेशक (स.यो एवं का.)

माझगांव डॉक के कार्यक्रमों की झलकियाँ



एमडीएल के सेवानिवृत्त होनेवाले कर्मचारियों के साथ उपस्थित श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं अन्य वरीष्ठ अधिकारीगण



सेवानिवृत्त होनेवाले कर्मचारियों के साथ श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)





एमडीएल को रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत इलेक्ट्रोनिक प्राप्ति के प्रभावकारी रूप से लागू करने के लिए बेस्ट परफोर्मिंग डीपीएसई पुरस्कार से पुरस्कृत





स्वच्छ भारत पखवाड़ा के दौरान आयोजित मिनी मैराथन में विजेता प्रशिक्षु



12 नवंबर 2022 गोवा में आयोजित 30 वें वेस्टर्न रिजनल मीट ऑफ द फॉरम ऑफ वोमन इन पब्लिक सेक्टर (डबल्यूआईपीएस) ने एमडीएल को उत्कृष्ट कार्यक्रम पुरस्कार से पुरस्कृत किया



10-11 फरवरी 2023, कोलकाता में आयोजित 33वें राष्ट्रीय मीट में उत्तम पश्चिम क्षेत्रीय पुरस्कार (Best Western Region Award) से पुरस्कृत (डबल्यूआईपीएस)

माझंगाव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड



दिनांक 24 नवंबर 2022 को आईएनएस मोरमुगोवा की
भारतीय नौसेना को सुपुर्दगी

राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता